सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार

" मिले हुए समय को ही अच्छा बनाए अगर अच्छे समय की राह देखेंगे तो पूरा जीवन कम पड़ जायेगा ...!! "

अज्ञात...

वर्ष–01 अंक–165 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, शनिवार 04 जुलाई 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य –2 रुपए

बीमा रिफंड के नाम पर 1.60 करोड़ की साइबर ठगी, दिल्ली से 3 आरोपी गिरफ्तार

बीमा लोकपाल बनकर दिया झांसा, नाइजीरियन नेटवर्क से जुड़े तार : दुर्ग साइबर थाना की कार्रवाई

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

रेंज साइबर थाना दुर्ग ने बीमा पॉलिसी रिफंड के नाम पर 1.60 करोड़ रुपए की ऑनलाइन ठगी का खुलासा करते हुए दिल्ली से 3 अंतरराज्यीय साइबर ठगों को गिरफ्तार किया है। आरोपी खुद को बीमा लोकपाल का अधिकारी बताकर लोगों को झांसे में लेते थे। जांच में करोड़ों के संदिग्ध लेन-देन और नाइजीरियन साइबर नेटवर्क से जुड़ाव भी सामने आया है।

ऐसे देते थे झांसा

आरोपियों ने पीड़ित को बीमा पॉलिसी की राशि रिफंड कराने का झांसा दिया और विभिन्न बैंक खातों में ऑनलाइन ट्रांजेक्शन कराकर कुल 1.60 करोड़ रुपए ठग लिए। मामला रेंज साइबर थाना दुर्ग में अपराध क्रमांक 03/2026 धारा 318(2), 318(4), 336(3) बीएनएस एवं 66-डी आईटी एक्ट के तहत दर्ज है।

दिल्ली से हुई गिरफ्तारी

तकनीकी साक्ष्य और बैंक खातों के विश्लेषण के आधार पर साइबर टीम दिल्ली पहुंची। टीम ने मनमीत सिंह (42), निवासी तिलक विहार तिलक नगर, ईशांत माहे उर्फ ईशु (37), निवासी चंदर विहार निलोठी एक्सटेंशन और अमनदीप सिंह (33), मूल निवासी श्रीगंगानगर, वर्तमान निवासी चंदर विहार दिल्ली को गिरफ्तार किया। पूछताछ में

आरोपियों ने पैसों के लालच में बैंक खाते खुलवाकर साइबर ठगी के लिए उपलब्ध कराना कबूल किया।

नाइजीरियन नेटवर्क का हाथ

जांच में सामने आया कि इन बैंक खातों का उपयोग एक विदेशी नाइजीरियन साइबर ठगी नेटवर्क द्वारा किया जा रहा था। आरोपियों के बैंक खातों में करोड़ों के संदिग्ध लेन-देन मिले हैं और विभिन्न राज्यों में इनके खिलाफ साइबर ठगी की शिकायतें दर्ज हैं।

3 मोबाइल, 6 पासबुक जब्त

आरोपियों को 1 जुलाई को दिल्ली से गिरफ्तार कर तीस हजारी न्यायालय से ट्रांजिट रिमांड पर दुर्ग लाया गया। इनके कब्जे से 3 मोबाइल फोन, 6 बैंक पासबुक, 4 चेकबुक और विभिन्न सिम कार्ड जब्त किए गए।

टीम की सराहनीय भूमिका

कार्रवाई में उप पुलिस अधीक्षक डॉ. चित्रा वर्मा, निरीक्षक पुष्पेन्द्र भट्ट, सउनि यशवंत श्रीवास्तव, आरक्षक सुरेन्द्र कटरे, आवेश खान, कामेश्वर देशमुख व विक्रम सिंह राजपूत की सराहनीय भूमिका रही। दुर्ग पुलिस ने अपील की है कि बीमा रिफंड,केवाईसी अपडेट या निवेश के नाम पर कॉल या मैसेज आने पर बिना सत्यापन राशि ट्रांसफर न करें।

जिला अस्पताल दुर्ग में युवती की मौत पर कांग्रेस ने उठाए सवाल

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

जिला चिकित्सालय दुर्ग में गंभीर एनीमिया से पीड़ित 22 वर्षीय युवती की उपचार के दौरान मौत के मामले में जिला कांग्रेस कमेटी दुर्ग शहर ने स्वास्थ्य व्यवस्था पर सवाल उठाए हैं। कांग्रेस ने पूरे प्रकरण की स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं उच्च स्तरीय जांच कराकर वास्तविक दोषियों पर कठोर कार्रवाई की मांग की है।

48 घंटे तक नहीं मिला रक्त

जिला कांग्रेस अध्यक्ष धीरज बाकलीवाल ने कहा कि युवती को शासन की व्यवस्था के तहत निःशुल्क रक्त मिलना था, लेकिन लगभग 48 घंटे तक रक्त उपलब्ध नहीं कराया गया। इससे उसकी मौत हो गई। यह स्वास्थ्य व्यवस्था की गंभीर विफलता है। यह केवल एक परिवार की त्रासदी नहीं, बल्कि पूरे जिले की स्वास्थ्य सेवाओं पर प्रश्नचिह्न है।

आंतरिक जांच से नहीं होगी निष्पक्षता

कांग्रेस नेताओं ने आरोप लगाया कि अस्पताल प्रशासन की आंतरिक जांच में केवल कुछ कर्मचारियों पर कार्रवाई कर मामले को सीमित किया जा रहा है। पूरे प्रकरण में वरिष्ठ अधिकारियों की भूमिका की भी निष्पक्ष जांच जरूरी है। अस्पताल प्रशासन खुद जांच करेगा तो निष्पक्षता पर सवाल उठना स्वाभाविक है।

कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन

इसी संबंध में जिला कांग्रेस के प्रतिनिधिमंडल ने कलेक्टर दुर्ग को ज्ञापन सौंपा। मांग की गई कि जिला प्रशासन के स्तर पर स्वतंत्र जांच समिति गठित की जाए, वास्तविक दोषियों की जवाबदेही तय हो और किसी अधिकारी या कर्मचारी को संरक्षण दिए बिना कठोर वैधानिक व विभागीय कार्रवाई हो। साथ ही जिला अस्पताल में रक्त उपलब्धता और आपातकालीन सेवाओं की समीक्षा कर सुधार किए जाएं।

यह रहे उपस्थित

कांग्रेस ने चेतावनी दी कि यदि पीड़ित परिवार को न्याय नहीं मिला तो पार्टी आमजन के साथ मिलकर लोकतांत्रिक व शांतिपूर्ण संघर्ष करेगी। प्रतिनिधिमंडल में प्रवक्ता सुशील भारद्वाज, विजय चंद्राकर, गुरदीप भाटिया, आनंद देव ताम्रकार, देव श्री साहू, पोषण साहू, संजय बत्रा, प्रकाश जोशी, आयुष शर्मा, एजाज गोल्डी, विमल यादव, असगर अली, राहुल शर्मा सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे।

आईआईएम राजधानी रायपुर में शुरू हुआ मंत्रिमंडल का ' 3.0 का चिंतन शिविर '

बदलते समय के अनुसार खुद को तैयार करना जरूरी, सुशासन और विकास पर दो दिन मंथन

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की अगुवाई में छत्तीसगढ़ मंत्रिमंडल का दो दिवसीय 'चिंतन शिविर 3.0' शनिवार को आईआईएम रायपुर में शुरू हुआ। राज्य शासन के सुशासन एवं अभिसरण विभाग और आईआईएम रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित शिविर में प्रदेश के विकास, सुशासन और प्रशासनिक सुधारों पर व्यापक चर्चा की जा रही है।

बदलते दौर में प्रशासन को बनाना होगा सक्षम

शिविर के उद्घाटन पर मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि बदलते दौर में शासन-प्रशासन को नई चुनौतियों और संभावनाओं के अनुरूप लगातार तैयार करना जरूरी है। ऐसे आयोजन नीति निर्माण, अनुभवों के आदान-प्रदान और विशेषज्ञों से सीखने का प्रभावी मंच हैं, जिससे शासन की कार्यक्षमता को बेहतर बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि सुशासन का मतलब केवल योजनाएं बनाना नहीं, बल्कि उन्हें प्रभावी ढंग से लागू कर जनता की अपेक्षाओं को पूरा करना है। सरकार पारदर्शी, जवाबदेह और परिणामोन्मुखी प्रशासनिक व्यवस्था विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

इन विषयों पर हो रही चर्चा

दो दिवसीय शिविर में कृषि, ग्रामीण विकास, उद्योग, निवेश, पर्यटन, खेल, नवाचार, आधुनिक तकनीक, नेतृत्व विकास, संस्थागत सुधार और जनसेवा जैसे विषयों पर विशेषज्ञों के साथ गहन विचार-विमर्श किया जा रहा है। इन चर्चाओं से मिले सुझावों के आधार पर शासन की प्राथमिकताएं तय कर विभागीय समन्वय को मजबूत करने की रणनीति बनेगी।

पहले दिन विशेषज्ञों ने दिए व्याख्यान

शिविर के पहले दिन आध्यात्मिक गुरु गौर गोपाल दास ने नेतृत्व और जीवन मूल्यों पर व्याख्यान दिया। अभय करंदीकर ने उभरती तकनीकों और भविष्य के प्रशासन में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला। कृषि विशेषज्ञ डॉ. रमेश चंद ने कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को लेकर अपने विचार साझा किए।

दूसरे दिन योग सत्र से होगी शुरुआत

रविवार को कार्यक्रम की शुरुआत योग सत्र से होगी। इसके बाद सुमन बिल्ला, शशांक मणि त्रिपाठी, ओलंपिक पदक विजेता गगन नारंग और डॉ. विनय सहस्रबुद्धे पर्यटन, सार्वजनिक नीति, नेतृत्व और सुशासन पर अनुभव साझा करेंगे। शिविर का मुख्य उद्देश्य प्रशासनिक नवाचार को बढ़ावा देना, विभागों में बेहतर तालमेल स्थापित करना और नागरिक-केंद्रित शासन व्यवस्था को मजबूत करना है। राज्य सरकार इसे 'विकसित छत्तीसगढ़' के लक्ष्य की दिशा में महत्वपूर्ण पहल मान रही है।

कवर्धा में नर चीतल के शिकार का भंडाफोड़, 7 शिकारी गिरफ्तार

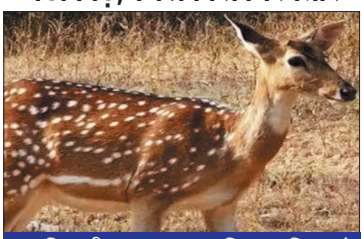

मुखबिर की सूचना पर वन विकास निगम ने रंगे हाथ दबोचा, सभी भेजे गए जेल

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर-कवर्धा

छत्तीसगढ़ में वन्यजीव संरक्षण को लेकर चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत कवर्धा परियोजना मंडल को बड़ी सफलता मिली है। वन विकास निगम की टीम ने बोड़ला परियोजना परिक्षेत्र में नर चीतल के अवैध शिकार के मामले में 7 आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया, जहां से सभी को जेल भेज दिया गया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार बोड़ला परिक्षेत्र के भलपहरी बीट के जंगल में शिकारियों ने जाल बिछाकर लगभग 3 वर्ष के नर चीतल का शिकार किया था। शिकारी मांस पकाकर उसे आपस में बांटने की तैयारी कर रहे थे। मुखबिर से सूचना मिलने पर वन विकास निगम की टीम ने योजनाबद्ध तरीके से घेराबंदी कर दबिश दी और सभी 7 आरोपियों को रंगे हाथों पकड़ लिया।

मांस और शिकार की सामग्री जब्त

कार्रवाई के दौरान आरोपियों के पास से करीब 500 ग्राम पका हुआ चीतल का मांस, नायलॉन रस्सी, 3 कुल्हाड़ियां, स्टील के तार, लकड़ी से बने फंदे और खून से सना थैला बरामद किया गया। आरोपियों के खिलाफ वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की संबंधित धाराओं के तहत प्रकरण दर्ज कर वैधानिक कार्रवाई की गई।

नियमित गश्त से मिल रही सफलता

वन विभाग और वन विकास निगम द्वारा संवेदनशील क्षेत्रों में नियमित गश्त और निगरानी अभियान चलाए जा रहे हैं। विभाग की सतकर्ता और त्वरित कार्रवाई से वन्यजीव अपराधों पर नियंत्रण हो रहा है।

सरकार की सख्त नीति

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय और वन मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि राज्य सरकार वन, वन्यजीव और जैव विविधता के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है। आधुनिक निगरानी और सूचना तंत्र से अवैध शिकार पर अंकुश लगाया जा रहा है। वन मंत्री ने आम नागरिकों से भी अपील की कि कहीं भी अवैध शिकार या वन अपराध की जानकारी मिले तो तुरंत वन विभाग को सूचना दें, ताकि प्रदेश की वन्यजीव संपदा का संरक्षण हो सके।

जेसीआई रायपुर वामा कैपिटल के नारी संगम सीजन-3 ने रचा इतिहास

300 संस्थाओं को एक साथ मंच देने पर गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

जेसीआई रायपुर वामा कैपिटल द्वारा आयोजित नारी संगम झ सीजन 3 : लव यू जिंदगी का भव्य आयोजन पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। महिलाओं के नेतृत्व और सशक्तिकरण पर केंद्रित इस महासम्मेलन में लगभग 300 संस्थाओं से 2000 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया।

300 ऑर्गेनाइजेशन को एक मंच पर लाने का रिकॉर्ड

आयोजन की सबसे बड़ी उपलब्धि रही 300 संस्थाओं को एक साथ एक मंच पर लाना। जेसीआई रायपुर वामा कैपिटल का नाम इस उपलब्धि के लिए गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया। डॉ. सोनम शर्मा ने इसकी घोषणा की। कार्यक्रम में रायपुर के साथ-साथ बेमेतरा, राजनांदगांव, कोरबा, बिलासपुर, भिलाई, दुर्ग, कुम्हारी सहित अन्य शहरों की संस्थाएं शामिल हुईं। सभी महिलाओं को मेडल पहनाकर सम्मानित किया गया।

लव यू जिंदगी पर हुआ विशेष प्रशिक्षण सत्र

कार्यक्रम की शुरुआत सायं 4:30 बजे हुई। इसके बाद इंटरनेशनल ट्राइम ट्रेनर पीपी जेएफआर राजेश अग्रवाल ने लव यू जिंदगी विषय पर प्रशिक्षण दिया। उन्होंने कहा कि ईश्वर ने हमें अनमोल जीवन दिया है, इसे आनंद के साथ जीना चाहिए। छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा और नकारात्मकता के बजाय सकारात्मक सोच और शांति से परिस्थितियों का सामना करना चाहिए। महिलाओं ने पूरे अनुशासन और उत्साह के साथ सत्र में भाग लिया।

मैगजीन वामिका का विमोचन और सम्मान

समापन सत्र में संस्था की मैगजीन वामिका का विमोचन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न संस्थाओं को विशेष सम्मान दिए गए। – ओल्डेस्ट ऑर्गनाइजेशन सम्मानः गुजराती महिला मंडल, बेस्ट ड्रेसअप अवॉर्ड: BGS महिला मंडल, बेस्ट थीम अवॉर्ड: राधे राधे ग्रुप, इसके साथ ही 10 भाग्यशाली प्रतिभागियों का लकी ड्रॉ निकाला गया। कार्यक्रम निःशुल्क रखा गया था और सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

नेतृत्व और सहयोग

आयोजन का नेतृत्व जेसीआई अध्यक्ष डॉ. धृति वैभव शर्मा ने किया। इसे सफल बनाने में फाउंडर प्रेसिडेंट लीना वर्धर, चैप्टर कन्वीनर रुपाली दुबे, इंचार्ज आंचल पंजवानी, समन्वयक जया अरोड़ा, सचिव प्रीति अग्रवाल सहित पूरी वामा टीम का योगदान रहा।

आयोजकों ने कहा कि नारी संगम केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि महिलाओं के उत्साह, सीखने और सशक्त नेतृत्व का उत्सव बन गया है।

प्रवेशोत्सव में शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव ने विद्यार्थियों, पालकों और शिक्षकों से किये संवाद

नवप्रवेशी विद्यार्थियों का तिलक लगाकर और मिठाई खिलाकर किया स्वागत, बच्चों को गणवेश और जूते भी किए गए वितरित

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

शाला प्रवेशोत्सव के अवसर पर प्रदेश के शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव ने दुर्ग विधानसभा क्षेत्र के दीपकनगर और तितुरडीह स्थित स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट विद्यालय तथा पंचशील नगर के शासकीय चंद्रशेखर आजाद विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों में शामिल होकर नवप्रवेशी विद्यार्थियों का तिलक लगाकर और मिठाई खिलाकर स्वागत किये। इस दौरान बच्चों को गणवेश एवं जूते भी वितरित किए गए।

शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव ने विद्यार्थियों, पालकों और शिक्षकों से संवाद करते हुए कहा कि नया शिक्षा सत्र बच्चों के नए सपनों और नई उम्मीदों की शुरुआत है। राज्य सरकार का प्रयास है कि प्रदेश के प्रत्येक बच्चे को अच्छा शैक्षणिक वातावरण, आधुनिक सुविधाएं और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले, ताकि वे अपने जीवन के लक्ष्य को

हासिल कर सकें।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में शिक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए लगातार काम किया जा रहा है। स्कूलों में बेहतर अधोसंरचना, आधुनिक संसाधन और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण उपलब्ध कराया जा रहा है, जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके।

कार्यक्रम के दौरान शिक्षा मंत्री ने विद्यालय में स्थापित स्मार्ट क्लास का शुभारंभ किये। उन्होंने कहा कि तकनीक आधारित शिक्षा से बच्चों को विषयों को समझने में आसानी होगी और वे भविष्य की प्रतिस्पर्धाओं के लिए बेहतर ढंग से तैयार होंगे।

शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव कक्षाओं में भी पहुंचे और बच्चों के बीच बैठकर उनसे पढ़ाई, पसंदीदा विषयों और भविष्य के सपनों पर चर्चा की। बच्चों का उत्साह, आत्मविश्वास और सीखने की जिज्ञासा देखकर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की तथा मन लगाकर पढ़ाई करने और नियमित रूप से विद्यालय आने के लिए प्रेरित किये।

इस अवसर पर उन्होंने पालकों से बच्चों की नियमित पढ़ाई पर ध्यान देने तथा शिक्षकों से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और अनुशासित शैक्षणिक वातावरण सुनिश्चित करने का आग्रह किये। उन्होंने विश्वास जताया कि विद्यार्थियों की मेहनत, शिक्षकों के मार्गदर्शन और पालकों के सहयोग से प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था और अधिक मजबूत होगी।

खास खबर

आदतन अपराधी सोमेश वैष्णव हुआ जिलाबदर, दुर्ग सहित 7 जिलों में एक साल के प्रवेश पर रोक

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

दुर्ग पुलिस के प्रतिवेदन के आधार पर जिला दण्डाधिकारी ने आदतन अपराधी सोमेश वैष्णव (37 वर्ष) निवासी ग्राम अंजोरा, थाना पुलगांव के विरुद्ध छत्तीसगढ़ राज्य सुरक्षा अधिनियम, 1990 की धारा 5(क)(ख) के तहत एक वर्ष के लिए जिलाबदर की कार्रवाई की है।

पुलिस के अनुसार सोमेश वैष्णव के विरुद्ध वर्ष 2002 से 2023 के बीच लूट, मारपीट, गाली-गलौज, जान से मारने की धमकी, अवैध हथियार रखने और अवैध शराब बिक्री जैसे मामलों सहित कुल 27 आपराधिक प्रकरण दर्ज हैं। उसके खिलाफ समय-समय पर प्रतिबंधात्मक कार्रवाई भी की गई, लेकिन उसके व्यवहार में कोई सुधार नहीं हुआ। जिला दण्डाधिकारी ने पुलिस प्रतिवेदन और उपलब्ध अभिलेखों का परीक्षण करने के बाद पाया कि आरोपी की आपराधिक गतिविधियों से क्षेत्र में भय और आतंक का माहौल बन रहा है तथा लोक व्यवस्था प्रभावित हो रही है। इसे देखते हुए जिलाबदर का आदेश जारी किया गया।

आदेश के अनुसार आरोपी को एक सप्ताह के भीतर दुर्ग जिले के साथ-साथ राजनांदगांव, रायपुर, धमतरी, बेमेतरा, बालोद और खैरागढ़-छुईखदान-गंडई जिलों की सीमाओं से बाहर जाना होगा। साथ ही एक वर्ष तक सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति के बिना इन जिलों में प्रवेश नहीं कर सकेगा। दुर्ग पुलिस ने आम नागरिकों से अपील की है कि कानून व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग करें और किसी भी आपराधिक या असामाजिक गतिविधि की सूचना तत्काल पुलिस को दें। पुलिस ने कहा कि आदतन अपराधियों और असामाजिक तत्वों के विरुद्ध विधिसम्मत एवं प्रभावी कार्रवाई आगे भी लगातार जारी रहेगी।

ईपीएफओ पोर्टल पर संविदा कार्यादेश अपलोड करने के लिए स्वचालित प्रणाली की शुरू

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र ने वैधानिक अनुपालन को डिजिटल और पारदर्शी बनाने की दिशा में बड़ी पहल की है। बीएसपी ने कर्मचारी भविष्य निधि संगठन के पोर्टल पर संविदा कार्यादेश अपलोड करने के लिए बॉट आधारित स्वचालित प्रणाली विकसित कर लागू कर दी है। इससे सभी संविदा कार्यादेश समयबद्ध और त्रुटिरहित तरीके से अपलोड हो सकेंगे। नई प्रणाली का शुभारंभ कार्यपालक निदेशक प्रवीण निगम एवं कार्यपालक निदेशक पवन कुमार ने इस्पात भवन स्थित सभागार में किया। इस दौरान मुख्य महाप्रबंधक राजीव महेंद्रु सहित वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। शुभारंभ पर सिस्टम का लाइव डेमोंस्ट्रेशन भी किया गया।

ईपीएफओ के दिशा-निर्देशों के अनुसार बीएसपी के सभी संविदा कार्यादेश ईपीएफओ पोर्टल पर अपलोड करना अनिवार्य है। नई बॉट आधारित प्रणाली संयंत्र की आंतरिक सूचना प्रणाली और ईपीएफओ पोर्टल के बीच समन्वय से काम करती है। उपयोगकर्ता को सिर्फ अवधि चुननी होगी। इसके बाद सिस्टम सी एंड आईटी की रिपोर्ट से कार्यादेशों का विवरण खुद ले लेगा। ईपीएफओ लॉगिन डालते ही बॉट सुरक्षित रूप से पोर्टल से जुड़कर सभी कार्यादेश स्वतः अपलोड कर देगा।

वित्त एवं लेखा विभाग द्वारा विकसित इस प्रणाली से मैनुअल काम में कमी आएगी, समय बचेगा और कार्य की शुद्धता व दक्षता बढ़ेगी। बीएसपी प्रबंधन ने इसे प्रशासनिक प्रक्रियाओं में आधुनिक तकनीक के समावेश और ई-गवर्नेंस को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया है।

बल्क वेस्ट जनरेटरों के लिए सीपीसीबी पोर्टल पर पंजीयन अनिवार्य, नियम तोड़ने पर होगी कार्रवाई

स्रोत स्तर पर गीले और सूखे कचरे का पृथकीकरण सुनिश्चित करना भी होगा अनिवार्य

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

नगर पालिक निगम दुर्ग ने ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम-2026 के प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर सख्ती शुरू कर दी है। इसी क्रम में निगम के डाटा सेंटर में शहर के बल्क वेस्ट जनरेटरों (बड़े पैमाने पर कचरा उत्पन्न करने वाले संस्थानों) की महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में महापौर अलका बाघमार, आयुक्त सुमित अग्रवाल, लोक कर्म प्रभारी देव नारायण चन्द्राकर, स्वास्थ्य विभाग प्रभारी निलेश अग्रवाल, स्वास्थ्य अधिकारी दुर्गेश गुप्ता, सहायक स्वास्थ्य अधिकारी शेखर दुबे सहित निगम के अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में शहर के प्रमुख मैरिज पैलेस, होटल, हॉस्टल, शैक्षणिक संस्थानों और बड़ी आवासीय कॉलोनियों के संचालकों एवं प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

बैठक में आयुक्त सुमित अग्रवाल ने कहा कि ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम-2026 के तहत सभी बल्क वेस्ट जनरेटरों के लिए केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आधिकारिक पोर्टल पर ऑनलाइन पंजीयन अनिवार्य है। उन्होंने सभी संबंधित संस्थानों को निर्धारित समय-सीमा के भीतर पंजीयन कराने के निर्देश दिए और चेतावनी दी कि नियमों की अनदेखी करने वालों के खिलाफ जुर्माना, लाइसेंस निलंबन सहित अन्य वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रत्येक संस्था अपने परिसर में उत्पन्न होने वाले कचरे के वैज्ञानिक प्रबंधन और उचित निस्तारण के लिए स्वयं जिम्मेदार होगी। साथ ही स्रोत स्तर पर गीले और सूखे कचरे का पृथकीकरण सुनिश्चित करना भी अनिवार्य होगा।

महापौर अलका बाघमार ने कहा कि स्वच्छता केवल नगर निगम की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक, संस्था और प्रतिष्ठान का सामूहिक दायित्व है। यदि सभी बल्क वेस्ट जनरेटर नियमों का पालन करेंगे तो दुर्ग को स्वच्छ, सुंदर और पर्यावरण अनुकूल शहर बनाने का लक्ष्य आसानी से हासिल किया जा सकेगा। उन्होंने सभी होटल, मैरिज पैलेस, हॉस्टल और आवासीय कॉलोनियों से समय-सीमा के भीतर उडउड पोर्टल पर पंजीयन पूर्ण करने और पर्यावरण संरक्षण अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाने की अपील की।

बैठक में निगम अधिकारियों ने बल्क वेस्ट जनरेटरों को ऑनलाइन पंजीयन प्रक्रिया, कचरा पृथकीकरण, वैज्ञानिक अपशिष्ट प्रबंधन और नए नियमों के विभिन्न प्रावधानों की विस्तृत जानकारी दी। अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि आने वाले समय में नियमों के पालन की नियमित निगरानी की जाएगी तथा किसी भी प्रकार की लापरवाही मिलने पर नियमानुसार कठोर कार्रवाई की जाएगी। महापौर अलका बाघमार ने कहा कि दुर्ग को स्वच्छ, सुंदर और पर्यावरण अनुकूल बनाना नगर निगम की सर्वोच्च प्राथमिकता है। वहीं आयुक्त सुमित अग्रवाल ने दोहराया कि ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम-2026 का पालन सभी के लिए अनिवार्य है और नियमों के उल्लंघन पर किसी भी प्रकार की ढिलाई नहीं बरती जाएगी।

दुर्ग निगम में 9 एल्डरमैन नियुक्त

लंबे इंतजार के बाद दुर्ग नगर निगम में एल्डरमैन (नामांकित पार्षद) की नियुक्ति कर दी गई है। राज्य शासन ने कुल 9 एल्डरमैन मनोनीत किए हैं। नियुक्त किए गए एल्डरमैन में मदन वाढई, चमेली साहू, अनूप सोनी, तुलसी यादव, दशरथ निर्मलकर, गौरव शर्मा, तेखन सिन्हा, कांतिलाल जैन (गोलू) एवं नरेश तेजवानी शामिल हैं। इन नियुक्तियों के साथ ही नगर निगम की कार्यप्रणाली में नामांकित पार्षदों की भागीदारी सुनिश्चित होगी। लंबे समय से इन नियुक्तियों का इंतजार किया जा रहा था।

दुर्ग जिले के अन्य नगरीय निकायों में भी एल्डरमैन नियुक्त किए गए हैं। जारी सूची के अनुसार कुम्हारी और अम्लेश्वर नगर पालिका में 5-5, धमधा नगर पंचायत में 3, पाटन नगर पंचायत में 3, उतई नगर पंचायत में 3 तथा अहिवारा नगर पालिका में 5 एल्डरमैन मनोनीत किए गए हैं। शासन के इस निर्णय के बाद सभी नगरीय निकायों में नामांकित पार्षदों की नियुक्ति की प्रक्रिया पूरी हो गई है। स्थानीय राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में इन नियुक्तियों को लेकर उत्साह का माहौल है।

शाबाश योजना के तहत एचआर-एल एंड डी विभाग के कार्मिक किए गए सम्मानित

नवाचार और उत्कृष्टता के लिए 5 कर्मचारियों को मिला सेल ह्यशाबाश पुरस्कार

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र के मानव संसाधन-ज्ञानार्जन एवं विकास (एचआर-एल एंड डी) विभाग द्वारा 27 जून को एचआरडी सेंटर में सेल 'शाबाश' योजना के तहत सम्मान समारोह आयोजित किया गया। विभाग में नवाचार, परिचालन उत्कृष्टता और सतत सुधार में उल्लेखनीय योगदान देने वाले कार्मिकों को सम्मानित किया गया।

महाप्रबंधक प्रभारी (मानव संसाधनज्ञानार्जन एवं विकास) संजीव कुमार श्रीवास्तव ने पुरस्कार प्रदान किए। सेक्शन ऑफिसर विकास सरीन, सेक्शन एसोसिएट के. देवराजु, सेक्शन एसोसिएट एस. आर. सिन्हा तथा सेक्शन एसोसिएट प्रकाश राव को विभागीय कार्यों में उत्कृष्ट योगदान एवं नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए सम्मानित किया गया। विभाग के पूर्व सेक्शन एसोसिएट धरम दास को दीर्घकालीन, समर्पित एवं उल्लेखनीय सेवाओं के लिए विशेष सम्मान दिया गया।

सकारात्मक कार्य-संस्कृति का आधार

संजीव कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि कर्मचारियों के उत्कृष्ट कार्यों को समय-समय पर पहचान और सम्मान देना सकारात्मक कार्य-संस्कृति के निर्माण का महत्वपूर्ण आधार है। ऐसे सम्मान कर्मचारियों को नवाचार, उत्कृष्ट कार्य निष्पादन तथा संगठन के सतत विकास के लिए प्रेरित करते हैं। उन्होंने सभी कार्मिकों से नई कार्य-पद्धतियों को अपनाने और सामूहिक सीखने की संस्कृति को बढ़ावा देने का आह्वान किया। समारोह में एचआर-एल एंड डी विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में मौजूद रहे। सभी सम्मानित कार्मिकों को उनके योगदान के लिए बधाई दी गई।

कार्यपालक निदेशक संजय खंडेलवाल को भावभीनी विदाई, शिरीष सेलट संभालेंगे दुर्ग क्षेत्र की कमान

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड, दुर्ग क्षेत्र के कार्यपालक निदेशक संजय खंडेलवाल को उनके स्थानांतरण पर आयोजित एक गरिमामयी समारोह में भावभीनी विदाई दी गई। श्री खंडेलवाल को अब रायपुर मुख्यालय में कार्यपालक निदेशक (संचारण-संधारण) के महत्वपूर्ण पद पर पदस्थ किया गया है, जहाँ से वे पूरे प्रदेश की विद्युत वितरण व्यवस्था के संचालन का दायित्व संभालेंगे। दुर्ग क्षेत्र में श्री खंडेलवाल के स्थान पर अब शिरीष सेलट नए कार्यपालक निदेशक के रूप में कार्यभार ग्रहण करेंगे।

विदाई समारोह में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने 26 दिसंबर 2024 से अब तक के उनके कार्यकाल को अविस्मरणीय बताया। वक्ताओं ने कहा कि

श्री खंडेलवाल न केवल एक कुशल नेतृत्वकर्ता हैं, बल्कि बहुत ही बुद्धिमान, सज्जन और सकारात्मक सोच रखने वाले व्यक्ति भी हैं, जो बड़ी से बड़ी समस्याओं का समाधान सहजता से कर लेते हैं। उनके कार्यकाल में कार्यालय में एक शांत एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण रहा, जो भविष्य में भी सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

अपने विदाई संबोधन में श्री खंडेलवाल ने कहा कि कार्य को पूरी जिम्मेदारी और निष्ठा से करना ही सफलता की कुंजी है। उन्होंने कहा कि नई जिम्मेदारी के साथ प्रदेश की जनता और कर्मचारियों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने का वे हर संभव प्रयास करेंगे। उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय अपनी धर्मपत्नी श्रीमती रितु खंडेलवाल को देते हुए उनके सहयोग के प्रति आभार जताया। साथ ही, उन्होंने उपस्थित सभी सहकर्मियों से आग्रह किया कि वे नवपदस्थ कार्यपालक निदेशक शिरीष सेलट को भी दुर्ग क्षेत्र के विकास हेतु अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

कार्यक्रम में कार्यपालक निदेषक खंडेलवाल की पत्नी श्रीमती रितु खंडेलवाल, अतिरिक्त मुख्य अभियंता एस. मनोज, इसीजीआरएफ के अध्यक्ष पी.वी.सजीव, अधीक्षण अभियंता तरुण कुमार ठाकुर, डीजीएम एच आर संतोश साहू एवं कार्यपालन अभियंता श्रीमती अनसुईया ठाकुर सहित कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित हुए। कार्यक्रम का संचालन वरिश्ठ कल्याण अधिकारी डी.के. डूम्रे एवं आभार प्रदर्षन स्टॉफ ऑफिसर बी.एस.राजपूत द्वारा किया गया।

जेएलएन अस्पताल के निजीकरण के विरोध में बीएसपी कर्मचारियों का आक्रोश प्रदर्शन

अनाधिशासी कर्मचारी संघ बोला- अस्पताल जीवनरेखा, प्रबंधन ने भेजा चेतावनी पत्र

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

बीएसपी अनाधिशासी कर्मचारी संघ ने जेएलएन अस्पताल एंड रिसर्च सेंटर के प्रस्तावित निजीकरण के विरोध में 30 जून को अस्पताल के सामने आक्रोश प्रदर्शन किया। प्रदर्शन में बड़ी संख्या में बीएसपी कर्मियों ने भाग लिया। वक्ताओं ने कहा कि जेएलएन अस्पताल भिलाई इस्पात संयंत्र के कर्मचारियों और उनके आश्रितों के लिए जीवनरेखा है। किसी भी सरकारी संस्थान के निजीकरण का अनुभव पहले खराब रहा है। बीएसपी की जमीन-भवनों में संचालित निजी स्कूलों के कारण बीएसपी के अपने स्कूल या तो बंद हो गए या खराब स्थिति में हैं, जिससे कमचारियों को महंगी शिक्षा का बोझ उठाना पड़ रहा है। इसी तरह अस्पताल का निजीकरण होने पर स्वास्थ्य सेवाएं महंगी होंगी और गुणवत्ता भी गिरेगी। निजी संस्थान लाभ के उद्देश्य से काम करते हैं, जिसका नकारात्मक असर

7 सूत्रीय मांगों के साथ भेजा चेतावनी पत्र

प्रदर्शन के बाद यूनियन पदाधिकारियों ने बीएसपी निदेशक प्रभारी, सेल चेयरमैन और इस्पात सचिव को मांग सह चेतावनी पत्र भेजा। प्रमुख मांगें इस प्रकार है कि निजीकरण प्रस्ताव रद्द हो: जेएलएन को अक्क्टर की तर्ज पर विकसित कर बीएसपी प्रबंधन स्वयं संचालित करे।

विशेषज्ञ डॉक्टरों की भर्ती: झारखंड सरकार की तरह उच्च वेतन पर स्पेशलिस्ट/सुपर स्पेशलिस्ट की नियुक्ति हो।

मशीनों का अपग्रेडेशन: 3 टेस्ला टफ्क डिजिटल एक्स-रे की तरह अन्य मशीनें, लैब और अल्ट्रासाउंड अपग्रेड हों।

स्थाई भर्तियां: स्टाफ नर्स, फार्मासिस्ट, लैब टेक्नीशियन, मशीन ऑपरेटर की जगह स्थाई नियुक्ति सुनिश्चित हो।

पारदर्शी रेफरल: जिन मरीजों का इलाज जेएलएन में नहीं है, उनकी रेफरल प्रक्रिया पारदर्शी बने।

मरीजों को डाइट भोजन: अस्पताल में डायट चार्ट अनुसार भोजन उपलब्ध कराया जाए।

सुपर स्पेशलिटी अपग्रेड: जेएलएन को सुपर स्पेशलिटी अस्पताल बनाकर सेल की सभी इकाइयों के कर्मियों को रेफर कर आर्थिक रूप से मजबूत किया जाए।

कर्मियों, आश्रितों और सेवानिवृत्त कर्मचारियों पर पड़ेगा।

यूनियन नेताओं ने कहा कि एक समय जेएलएन अस्पताल पूरे छत्तीसगढ़ और मध्य भारत में चिकित्सा व दवाओं की गुणवत्ता के लिए नंबर एक संस्थान था। गलत प्रबंधन और नीतियों के कारण गुणवत्ता गिरी है, जिसे अच्छे प्रबंधन से सुधारा जा सकता है। सीमित संसाधनों वाले निजी अस्पताल बेहतर सेवा दे रहे हैं तो संसाधनों से भरपूर जेएलएन को भी बेहतर बनाया जा सकता है। यूनियन ने आरोप लगाया कि सेवानिवृत्त डॉक्टरों और कमचारियों के स्थान पर भर्तियां नहीं की गई, जबकि उचित भर्ती से अस्पताल अपने फंड से ही चल सकता है।

यूनियन ने चेतावनी दी कि मांगें नहीं मानी गई तो आगे और कड़े कदम उठाए जाएंगे। इसकी जिम्मेदारी बीएसपी-सेल प्रबंधन की होगी। सभा को यूनियन अध्यक्ष अमर सिंह, महासचिव किशोर कुमार साव, उपाध्यक्ष अभिषेक सिंह, उप महासचिव नवीन ध्रुव, कोषाध्यक्ष नवीन कुमार मिश्रा सहित कार्यकारिणी सदस्यों ने संबोधित किया।

ज्योतिष में चन्द्रमा कब बनता है शुभ और कब अशुभ?

ज्योतिषीय फलादेश के समय चन्द्रमा की विशेष स्थिति यानि चन्द्रमा के पक्ष का बल देखना अतिअनिवार्य है। चन्द्रमा की दो प्रमुख अवस्थाएँ होती हैं, एक क्षीण अवस्था और दूसरी पूर्ण अवस्था। चन्द्रमा को सामान्यत: शुभ ग्रह मानते हैं, परन्तु हर समय ऐसा नहीं होता है। क्षीण चन्द्रमा पाप ग्रह के रूप में माना जाता है, किन्तु पूर्ण चन्द्रमा शुभ ग्रह माना जाता है।

चन्द्रमा पूर्णिमा का हो अथवा सूर्य से चन्द्रमा 180ए दूर यानि सूर्य-चन्द्रमा आमने-सामने हों, तब चन्द्रमा पूर्ण और बहुत शक्तिशाली होता है। लेकिन जब चन्द्र पूर्णमासी के दिन पूर्ण चन्द्र के बिन्दु को आकाश में पार कर लेता है और सूर्य-चन्द्रमा के बीच का अंतर 180ए से कम होने लगता है तो चन्द्रमा की शक्ति दिन-प्रतिदिन घटने लगती है, साधारण भाषा में लोग इस अवस्था को घटता हुआ चांद कहते हैं। चांद तब तक घटता रहता है, जब तक वह सूर्य के साथ मिलकर पूर्ण अस्त बिन्दु तक नहीं पहुंच जाता। गणितीय भाषा में जब सूर्य और चन्द्र के भोगांश का अन्तर शून्य डिग्री हो जाता है तो उसे अमावस्या का दिन कहते हैं। इस पखवाड़े को कृष्ण पक्ष कहा जाता है।

सूर्य से चन्द्रमा के दूसरे पक्ष के गोचर की स्थिति एकदम विपरीत होती है। अमावस्या के बाद 0ए से अंतर बढ़ने लगता है, चन्द्रमा दिन-प्रतिदिन बल प्राप्त करता जाता है और सूर्य से 180ए के अन्तर पर पहुंच कर पूर्ण चन्द्रमा कहलाता है, इस पखवाड़े को शुक्ल पक्ष कहते हैं। सूर्य के भोगांश को जिस क्षण वह पार कर लेता है आगे बढ़ता है, उसे नया चांद, पड़वा या प्रतिपदा तिथि कहते हैं।

खगोलशास्त्री एवं ज्योतिर्विदों के अनुसार शुक्ल पक्ष की अष्टमी से कृष्ण पक्ष की सप्तमी तक चन्द्रमा पूर्ण होता है तथा कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की सप्तमी तक चन्द्रमा क्षीण होता है। फलादेश की दृष्टि से चन्द्रमा जब पूर्ण हो तभी उसका फल शुभ होता है अन्यथा अशुभ रहता है। कुछ ज्योतिर्विद शुभ-अशुभ चन्द्रमा के बीच चन्द्रमा के बलाबल की एक मध्य स्थिति भी बताते हैं, शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा दशमी तक चन्द्रमा मध्य बली होता है। दशमी के बाद दस दिनों तक चन्द्रमा अति बलवान होता है। इसके बाद के अन्तिम दस दिन का चन्द्रमा बलहीन हो जाता है और पूरी तरह अशुभ फल देता है। चन्द्रमा के भावफल देखते समय हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि चन्द्रमा बलहीन हो तो उसका फल अशुभ होता है, मध्यबली हो तो उसका फल सम होता है यानि ऐसी अवस्था में चन्द्रमा न शुभ फल देता है, न अशुभ, परन्तु बलवान होने पर शुभ फल देता है।

गृहारम्भ के समय भूमिपूजन एवं शिलान्यास करते समय इन बातों का रखें ध्यान

गृहारम्भ मूहूर्त के लिये निम्न नौ विषयों पर विचार करना चाहिए, प्रथम शेषनाग की स्थिति, दूसरा पृथ्वी की शयन आदि अवस्था, तीसरा गृह मालिक की जन्म राशि के अनुसार घात चन्द्र आदि, चौथा मास, पांचवा तिथि, छठा दिन, सातवां नक्षत्र, आठवां योग एवं नौंवा शुभ लग्न। सर्वप्रथम भूमिपूजन एवं शिलान्यास करने के लिए शेषनाग की स्थिति पर विचार करना अत्यनत आवश्यक है।

अक्सर नवीनतम भूखण्ड पर निर्माण हेतु भूमिपूजन एवं शिलान्यास करते समय लोग शेषनाग की स्थिति को नजरंदाज कर देते हैं, जिससे गलत जगह खुदाई करने पर उन्हें लाभ के बजाए अनेकानेक बाधाओं, कष्टों का सामना करना पड़ता है। अत: जब भी आप गृह निर्माण हेतु शुभ लग्न, मुहूर्त, तिथि आदि की गणना कराऐं, तो शेषनाग की स्थिति जानकर नीचे बताई गई जानकारी के अनुसार उचित जगह पर ही नीव खोदकर शिलान्यास करें। वास्तु मुहूर्त के सिद्धान्तों के आधार पर जिस दिशा में शेषनाग का वास होता है, उस दिशा में नींव की खुदाई का आरम्भ नहीं करना चाहिये।

जब शेषनाग का मुख ईशान कोण में हो- जब गोचर में सूर्य सिंह राशि, कन्या राशि या तुला राशि में हो, तो शेष नाग का मुख ईशान कोण यानी उत्तर-पूर्व दिशा में रहता है, अत: इन महीनों में अग्नि कोण यानि दक्षिण-पूर्व दिशा में नींव खोदकर शिलान्यास करें।

जब शेषनाग का मुख वायव्य कोण में हो- जब गोचर का सूर्य वृश्चिक राशि, धनु राशि, मकर राशि में हो तो शेषनाग का मुख वायव्य कोण यानी उत्तर-पश्चिम दिशा में होता है अत: ईशान कोण यानि उत्तर-पूर्व दिशा में नींव खोदकर शिलान्यास करें।

जब शेषनाग का मुख नैऋत्य कोण में हो- जब गोचर का सूर्य कुम्भ राशि, मीन राशि, मेष राशि में हो तो शेषनाग का मुख नैऋत्य कोण यानी दक्षिण-पश्चिम दिशा में होने से वायव्य कोण यानि उत्तर-पश्चिम दिशा में नींव की खुदाई आरम्भ करें।

जब शेषनाग का मुख अग्नि कोण में हो- जब गोचर का सूर्य वृष राशि, मिथुन राशि या कर्क राशि में हो तो शेषनाग का मुख अग्नि कोण यानी दक्षिण-पूर्व दिशा में रहता है, अत: नैऋत्य कोण यानि दक्षिण-पश्चिम दिशा में नींव खोदकर शिलान्यास करें।

शेषनाग के सर पर खुदवाने से माता-पिता की हानि, पीठ पर खुदवाने से भय, रोग, पीड़ा, पूंछ पर खुदवाने से कुल की हानि होती है। अत: उपरोक्त दिशाओं से, जिसमे शेषनाग का वास होता है, उससे अलग ऊपर बताई गई दिशाओं में ही नीव की खुदाई एवं शिलान्यास करना चाहिए। कुछ विद्वानों के अनुसार इन दिनों या नक्षत्रों में भी प्रारम्भ के 4, 8, 5, 3, 6, 7 घटी में ही होता है, शेष में नहीं।

गृह प्रवेश की सरल विधि, जिससे आजीवन निवास करे सुख-समृद्धि

ईश्वर की कृपा से स्वयं का घर बनवाने का जब अवसर मिले, तो गृह प्रवेश के दौरान इन विशेष बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। अक्सर लोग अधूरे भवन निर्माण कार्य पर ही गृह प्रवेश कर लेते हैं, वास्तु नियम के अनुसार भवन के हर प्रकार से पूरी तरह बन जाने के बाद ही गृह प्रवेश समारोह करना चाहिए, उससे पहले नहीं। ग्राउंड फ्लोर का पूरी तरह निर्माण हो जाने के बाद भी अगर दूसरी मंजिल पूरी नहीं हो पाई है तो गृह प्रवेश उस तारीख तक नहीं करना चाहिए, जब तक पूरा भवन न बन जाए।

- अंगर वास्तु के नियमों को पूरी तरह से मानें तो, गृह प्रवेश समारोह से पूर्व घर के अंदर किसी प्रकार का भोजन नहीं पकाना चाहिए अर्थात कोई चूल्हा या स्टोव नहीं जलाना चाहिए। किसी के भी द्वारा घर के अंदर स्नानागार या शौचालय का उपयोग गृह प्रवेश समारोह से पूर्व नहीं किया जाना चाहिए।
- गृह प्रवेश समारोह के लिए घर की ठीक प्रकार से सफाई करके उसे सजा देना चाहिए। विशेष रूप से प्रवेश द्वार की सज्जा केले के पौधे, आम की पत्तियों से बंधनद्वार, सुगंधित पुष्पों आदि से होनी चाहिए।
- गृह प्रवेश समारोह से पूर्व की रात्रि को वास्तु शांति अर्थात वास्तुपूजा, वास्तुहोम, वास्तुबलि, रक्षाहोम, सुदर्शन होम आदि किए जाने चाहिए। इसके पहले गाय और बछड़े को घर में प्रवेश कराकर तथा पवित्र जल से पूरे घर को शुद्ध किया जाना चाहिए।
- गृह प्रवेश के दिन एक सफेद कपड़े से, जिसे हल्दी से रंगकर सुखा लिया गया हो, मुख्यद्वार को ढांक दिया जाता है और द्वार पूजा की जाती है।
- गृह प्रवेश करने के बाद पूजा कक्ष में देवता की मूर्ति प्रतिष्ठा तथा अन्य औपचारिकताएं तथा अनुष्ठान जैसे दूध उबालना, गण-होम, नवग्रह होम, सत्यनारायण की पूजा, अतिथियों और कार्यकर्ताओं को स्वादिष्ट भोजन कराना, भवन निर्माण कार्यों में लगे कारीगरों को उपहार देना आदि कार्य पूरे किए जाते हैं।
- गृह प्रवेश समारोह के बाद पूरे घर को भली प्रकार प्रकाश से आलोकित किया जाना चाहिए और उसी दिन से परिवार उस घर में निवास करना प्रारम्भ कर दे।
- कुछ लोग गृह प्रवेश समारोह के बाद घर में ताला लगाकर अपने मूल स्थान पर चले जाते हैं, जो कि अनुचित है। यदि किसी कारणवश वे नए घर में नहीं रह सकें तो गृह प्रवेश समारोह को स्थगित कर देना चाहिए।

ऊं का उच्चारण करना शरीर और मन दोनों के लिए है लाभकारी

भारत की प्राचीन योग और ध्यान परंपरा में ऊं का विशेष महत्व माना गया है। यह तीन मुख्य ध्वनियों- अ, उ और म से मिलकर बना है। इसका उच्चारण किसी भी आयु वर्ग का व्यक्ति अपनी क्षमता और सुविधा के अनुसार कर सकता है। नियमित रूप से ऊं का उच्चारण करने से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

यह कहना है प्राकृतिक चिकित्सक भानु सरकानुनगो का। उनके अनुसार ऊं का उच्चारण करते समय शरीर में कंपन उत्पन्न होता है, जिससे पेट और श्वसन तंत्र पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। नियमित अभ्यास से पाचन क्रिया बेहतर हो सकती है और पेट की अतिरिक्त चर्बी कम करने में भी सहायता मिल सकती है। इसके साथ ही यह फेफड़ों को सक्रिय बनाता है, जिससे सांस लेने की क्षमता में सुधार हो सकता है। वहीं ऊं के उच्चारण से अस्थमा के मरीजों को भी इससे राहत मिलती है। यह फेफड़ों में जमा कफ को बाहर निकालने में मदद कर सकता है और गले की खराश को कम करने में सहायक माना जाता है। उच्चारण मन को शांत करने का एक सरल तरीका माना जाता है। इससे शरीर में मौजूद नकारात्मकता और तनाव को कम करने में मदद मिल सकती है।

एकाग्रता बढ़ती है और याददाश्त बेहतर होती है

नियमित अभ्यास करने वाले लोगों में एकाग्रता बढ़ने और याददाश्त बेहतर होने के अनुभव भी सामने आए हैं। माइग्रेन से पीड़ित लोगों को भी इससे कुछ हद तक राहत मिल सकती है। इसके अलावा उच्च रक्तचाप और थायराइड से जुड़े मरीजों के लिए भी यह लाभकारी माना जाता है, हालांकि किसी भी बीमारी में चिकित्सकीय उपचार जारी रखना जरूरी है। जब कई लोग एक साथ बैठकर ऊं का उच्चारण करते हैं तो वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव होता है। सामूहिक रूप से किया गया यह अभ्यास मानसिक शांति, आत्मविश्वास और सामाजिक जुड़ाव की भावना को भी मजबूत करता है।

मन चंगा तो कठौती में गंगा, गंगा नहाने से पहले मां गंगा की इन बातों को जान लें

गंगा केवल कोई जल नहीं है कि तुम मुँह में डालो और निर्मल हो जाओगे! कबीर कहते हैं 'कबीर मन निर्मल भयो जैसे गंगा नीर।', मतलब, गंगा की तरह मेरा मन भी अंदर से निर्मल हो गया यानी मेरे अंदर कोई विकार नहीं रहा। मैंने इस जगत को मरा हुआ देख लिया,और अंदर मेरे अब कुछ नहीं चलता है। आइए जानते हैं आध्यात्मिक गुरु मास्टरजी से गंगा स्नान का वास्तविक अर्थ क्या है...

संसारी शरीर में जीता है और शरीर में ही मर जाता है। उसका आत्मा से कोई लेना-देना नहीं है। और जो पारब्रह्म से यात्रा होती है, वहाँ शरीर की बात ही नहीं है, वहाँ केवल अशरीर है। अशरीर को हमने शरीर में छुपी आत्मा कहा है। जो अशरीर और आत्मा पर यात्रा करते हैं, वो अपने शरीर की और अपने संबंधों की चिता जलती हुई देख लेते हैं। तुम्हारे कितने जन्म हो गए और कितने जन्म होंगे, अगर तुम इस शरीर में ही अटके रहोगे। क्योंकि एक मनुष्य देह का जन्म व्यर्थ जाते ही तुम्हें चौरासी लाख मौतों को गुजरना पड़ता है। यहाँ कोई किसी को नहीं पूछता, कोई किसी को प्यार नहीं करता, सब ड्रामा और तमाशा है। गंगा यही कह रही है क्योंकि गंगा सब कुछ छोड़कर भागकर आई और सागर में मिल गई। गंगा को रास्ते में किसी से भी कोई लेना-देना नहीं है; वो अपने सागर से मिलकर एक हो जाती है। भागीरथ संसार के अंदर गंगा को लेकर आए। भागीरथ इक्ष्वाकु वंश के थे। जब भागीरथ को पता चला कि उनके साठ हजार पूर्वजों के शरीर ऐसे ही राख बने पड़े हुए हैं, तो उन्होंने उनका उद्धार करने के लिए तपस्या की और कपिल मुनि को प्रसन्न किया। कपिल मुनि ने कहा, 'जा स्वर्ग से गंगा को लेकर आ। जब गंगा में इनकी राख और अस्थियाँ प्रवाहित होंगी, तब उनका उद्धार हो जाएगा।' तब भागीरथ गंगा को लेने गए। विष्णुजी के अंगूठे से गंगा निकली, और जब गंगा निकली तो वो बहुत तेज धारा में बह रही थी। फिर कहा गया कि गंगा को शिव की जटाओं में डाल दो, ताकि शिव की जटाएँ धारा को रोक सकें। विष्णु के अंगूठे से गंगा शिव की जटाओं में गई और वहाँ से धरती पर गंगोत्री से गंगा आई और भागीरथ के साठ हजार पूर्वजों का उद्धार किया। फिर गंगा को कहा गया, कि तू पृथ्वी पर ही रुक और संसार को संदेश दे कि वो तेरी तरह दौड़े, किसी जगह पर भी रुके नहीं, किसी संबंधों में अटके नहीं। क्योंकि अगर अटक गए तो गंदे नाले के अंदर चले जाएँगे। गंगा संसार को यही संदेश दे रही है, ध्यान रखो।

गंगा केवल कोई जल नहीं है कि तुम मुंह में डालो और निर्मल हो जाओगे! तुम्हारे अंदर गंदा नाला चल रहा है, तुम्हारे विकारों का! विकारों का अर्थ है गंदा नाला: कामवासना, क्रोध ,लोभ, मोह, और अहंकार। तुम्हारे अंदर पाँच विकार भरे पड़े हैं तो तुम्हारे अंदर गंगा क्या करेगी? कबीर कहते हैं 'कबीर मन निर्मल भयो जैसे गंगा नीर।', मतलब, गंगा की तरह मेरा मन भी अंदर से निर्मल हो गया यानी मेरे अंदर कोई विकार नहीं रहा। मैंने इस जगत को मरा हुआ देख लिया, और अंदर मेरे अब कुछ नहीं चलता, मेरा विष्णु अंदर बैठा है। तुम्हारे अंदर भी स्वयं परमात्मा बैठा हुआ है, पर तुम्हारे विकारों के कारण तुम्हारे मन की गंगा मैली हो गई है, और तुम्हारे जन्म-मरण का कारण बन गई है। गंगा मतलब तुम्हारे विकारों कि अंदर से छुट्टी, तुम्हारे अंदर कोई विकार ना रहे और अंदर विकार तभी नहीं रहता जब तुम जगत को पूरी तरह मिथ्या देख लेते हो। तुम्हारे अंदर की गंगा निर्मल हो सकती है, अगर तुम अपने को 'मैं-मेरा' से विरक्त कर दो। 'मैं-मेरा' से विरक्त होते ही गंगा निर्मल हो जाएगी और सागर से मिलकर एक हो जाएगी। तब तुम्हें पारब्रह्म परमेश्वर का धाम मिलता है। तो ये अंदर का सारा खेल समझना है। सारा अंदर का खेल है, बाहर का कुछ नहीं है। संत रविदास बोलते हैं, 'मन होय चंगा तो कठौती विच गंगा।' मतलब, चमड़े के अंदर भी गंगा है, पर अगर तुम्हारा मन निर्मल नहीं है, तो तुम हरिद्वार में लाख स्नान कर आओ, गंगा भी तुम्हें अस्वीकार कर देगी। जन्मों से तुम मर-मर कर इस धरती पर जन्म लेकर आ रहे हो इसलिए जीवन के सत्य को जानना होगा, गंगा जैसा निर्मल बनो। शरीर कभी पवित्र नहीं होता ध्यान रखना, आत्मा ही पवित्र होती है। जिस दिन तुम्हारे विकार हट जाते हैं, तब तुम्हारी आत्मा पवित्र हो जाती है। मनुष्य जन्म की कद्र करो, क्योंकि 'मनुष्य जन्म ना मिले बारंबार।' इसलिए अपने को जगाओ,अपने निर्मल रूप में आओ ताकि परमात्मा से मिलकर एक हो सको!

संपादकीय

वोट के लिए केजरीवाल ने पार्टी को सनातनी बना दिया

राजनीति का परम लक्ष्य है जनता का ज्यादा वोट हासिल करना और सत्ता पर काबिज होना। लोकतंत्र में सबसे ज्यादा वोट मिलने पर ही सत्ता मिलती है, इसलिए ज्यादा वोट हासिल करने के लिए राजनीतिक दलों के नेता कुछ भी कहते है, कुछ भी करते हैं। सबसे ज्यादा वोट सबसे बड़े समुदाय,सबसे बड़े समाज से मिल सकता है और देश में सबसे बड़ा समाज हिंदू समाज है, सनातनी समाज है। इसे बहुसंख्यक समाज भी कहा जाता है और माना जाता है क्योंकि यह देश की आबादी का 80 प्रतिशत माना जाता है और बाकी समाज सब मिलकर 20 प्रतिशत माने जाते हैं।सीधी सी बात है कि जिसे चुनाव जीतना है उसे 80 प्रतिशत लोगों का वोट मिलना चाहिए। वह 20 प्रतिशत के जरिए तो सत्ता पर आ नहीं सकता। इसलिए इस देश में अब 80 लोगों के वोट हासिल करने के लिए सभी राजनीतिक दल कई तरह से प्रयास करते हैं। कोई बीस प्रतिशत समाज के वोट के बाद बहुसंख्यक समाज को दलित, अगड़ा, पिछड़ा . अति दलित, अति दलित, आदिवासी, जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र के नाम पर टुकड़ों में बांटकर सत्ता प्राप्त करता रहा है।तब राजनीति करने वालों को लगता था कि 20 प्रतिशत वोट बाकी समाज का मिल जाए और 25 प्रतिशत वोट जाति,धर्म,भाषा,वर्ग के नाम पर मिल जाए तो सरकार बनाई जा सकती है।

2014 तक 20 प्रतिशत वोट अल्पसंख्यकों का मिल जाए तो राजनीतिक दल की जीत तय मानी जाती थी क्योंकि माना जाता था कि बाकी धर्म,जाति,वर्ग,भाषा में बंटे हुए लोग तो वोट तो देंगे ही। यानी बहुसंख्यक समाज का वोट किसी राजनीतिक दल की जीत के लिए जरूरी नहीं माना जाता था। अल्पसंख्यक वर्ग का वोट जीत के प्रभावी व निर्णायक माना जाता था।सब यही राजनीति करते थे यानी अल्पसंख्यकों को ज्यादा महत्व देकर बहुसंख्यक को कम महत्व देने की क्योंकि वह जाति,धर्म, भाषा व क्षेत्र के नाम बांट दिए जाने के कारण बंटा हुआ था। तब इसी लिए कई लोग गर्व से कह जाते थे कि देश के संसाधन पर पहला हक अल्पसंख्यक समुदाय का है।2014 के बाद देश की पूरी राजनीति बदल गई है। क्योंकि देश में पहली बार ऐसा नेतृत्व सामने आया है जिसने बहुसंख्यक समाज को एकजुट किया है और उनको हिंदू समाज,सनातनी के नाम देकर एहसास कराया है कि इस देश में तुम्हारी आबादी सबसे ज्यादा है। इसलिए राजनीति में सबसे ज्यादा प्रभावी व निर्णायक भी तुमको ही होना चाहिए और 14 के बाद पहली बार हिंदू समाज जागा है, सनातनी चेतना देश में पैदा हुई है। और पहली बार ऐसी सरकार बनी है जिसको हिंदू समाज व सनातनी समाज की फिक्र है। इससे एक चक्र चल रहा है कि सनातनी चेतना से देश मे सनातनी सरकार बन रही है और सनातनी सरकार देश में सनातनी चेतना का विस्तार कर रही है।

पिछले 12 साल मे इसी सनातनी चेतना के विस्तार से कई राज्यों में जहां सनातनी सरकार की कल्पना नहीं की जा सकती थी अब सनातनी सरकार बन रही है, पहली बार बन रही है। यानी देश के कई राज्यो में अब सनातनी चेतना का विस्तार हो रहा है। इसी का प्रभाव है कि केजरीवाल जैसे अराजकतावादी नेता को भी कहना पड़ रहा है कि उनकी पार्टी यानी आम आदमी पार्टी ही सच्ची सनातनी पार्टी है। आम आदमी पार्टी ने सनातन मूल्यों के प्रति सच्ची श्रध्दा से काम किया है जबकि भाजपा ने राजनीतिक लाभ के लिए भगवान राम के नाम का इस्तेमाल किया है। अब केजरीवाल सनातनी हो गए हैं तो वह कैसे और क्यों सनातनी है इसे वह साफ नही करते हैं, वह यह बताने का प्रयास करते हैं कि भाजपा क्यों सनातनी पार्टी नहीं है। केजरीवाल के अनुसार भाजपा के कई वरिष्ठ नेताओं ने अब तक दो साल के बाद भी भगवान राम के मंदिर में पूजा अर्चना नहीं की है, इसलिए भाजपा सनातनी पार्टी नहीं है और केजरीवाल ने दो साल के बाद राम मंदिर आकर पूजा अर्चना कर ली है इसलिए केजरीवाल के साथ पूरी पार्टी सच्ची सनातनी पार्टी हो गई है।

केजरीवाल जो करें कम है, जो कहे कम है,वह सत्ता के लिए कुछ भी कहते रहे हैं, कुछ भी करते रहे हैं। अब तक दिल्ली के बाद पंजाब में उन्होंने मुफ्त वाली राजनीति कर सत्ता हासिल करते रहे हैं. उनका एक सूत्री फार्मूला रहा है कि तुम मुझे सत्ता दो मैं तुम्हें बिजली, पानी, शिक्षा, उपचार मुफ्त दूंगा। वह खुद को सबसे ज्यादा यानी कट्टर ईमानदार बताते रहे हैं और दूसरों को कट्टर बेईमान। वह लोगों को चालाकी से इस बात का एहसास कराते थे कि बाकी लोग बेईमान हैं,मैं ही ईमानदार हूं।15 साल में उनके मुफ्त के वादे की पोल खुल गई है और कट्टर ईमानदार का नकाब भी उतर गया है। इसलिए अब वह सच्चे सनातनी का रूप धरकर सनातनियों को ठगने के लिए मैदान में उतर गए हैं। वह देश व दुनियां के पहले ऐसे नेता हैं जिनके राम लला के दर्शन पूजन करने से पूरी पार्टी सनातनी हो गई,सच्ची सनातनी हो गई और भाजपा के कई दशकों से राम लला के मंदिर के लिए लड़ने वाली, मंदिर निर्माण मे अहम भूमिका निबाहने वाली मात्र इसलिए सनातनी नहीं है कि उसके कई वरिष्ठ नेताओं ने अब तक राम मंदिर आकर दर्शन पूजन नहीं किया है।

केजरीवाल इसलिए सनातनी हैं कि वह राम के नाम पर वोट नहीं मांगते है, वह राम को भगवान मानते हैं। भाजपा राम के नाम पर वोट मांगती है और उनको भगवान नहीं मानती है, इसलिए भाजपा सनातनी नहीं है। राम मंदिर चढ़ावे की चोरी से अन्य नेताओं की तरह केजरीवाल को भी मौका मिल गया खुद को सनातनी कहने और दूसरो को असनातनी कहने का। केजरीवाल की आदत है कि जब वह खुद को ईमानदार कहते हैं तो बाकी सब नेताओं का बेईमान आसानी से कह देते हैं, यही वजह है कि आज जब वह खुद को राम मंदिर जाकर खुद का सनातनी और पूरी पार्टी को सनातनी कह रहे हैं सिर्फ भाजपा नहीं, वह विपक्ष की कांग्रेस, सपा, बसपा उन सभी पार्टियों का असनातनी कह रहे हैं जो आज तक राम मंदिर जाकर दर्शन पूजन नहीं कर पाए हैं केजरीवाल खुद को पार्टी को सनातनी इसलिए भी कह रहे हैं कि पंजाब उनके सीएम को अकालतख्त ने पंथविरोधी गुरुद्रोही माना है। इससे उनकी सत्ता पर सवालिया निशान लग गया है,माना जा रहा है कि आप के लिए इसी वजह से फिर से चुनाव पंजाब में जीतना मुश्किल हो गया है।

लोकप्रियता और गंभीरता के बीच टेलीविजन मीडिया !

संजय उवाच

प्रो. संजय द्विवेदी

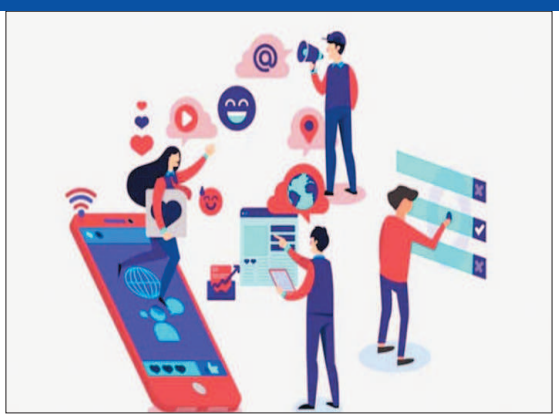

क्या टीवी पत्रकारिता का समय जा चुका है ? क्या लोग टीवी नहीं देख रहे हैं। जाहिर हैकोई भी दृश्य माध्यम बहुत प्रभावशाली होता ही है। टीवी का भी असर रहा है, भले अब दृश्य माध्यम मोबाइल पर जा रहे हों। उसकी ताकत यही है कि उसके साथ आवाज और दृश्य का संयोग है। दृश्य माध्यमों की यही शक्ति और सीमा दोनों है। टीवी पर झामा क्रियेट करना पड़ता है। स्पर्धा और आगे निकलने की होड़ में कई बार सीमाएं पार हो जाती हैं। यह सिर्फ भारत–पाक मामले पर नहीं है। यह अनेक बार होता है। जब मुद्दे नहीं होते तब मुद्दे खड़े भी किए जाते हैं। इस मुद्दे पर चर्चा बहुत हो रही है, किंतु इसका बहुत लाभ नहीं है। हर माध्यम की अपनी जरूरतें और बाजार है, वे उसके अनुसार ही खुद को ढालते हैं।

अलग माध्यम है टीवी

बहुत गंभीर विमर्श के और जानकारियों से भरे चैनल भी हैं। किंतु जब मामला लोकप्रियता बनाम गंभीरता का हो तो चुने तो लोकप्रिय ही जाते हैं। शोर में बहुत सी आवाजें दब जाती हैं, जो कुछ खास कह रही हैं। हमारे पास ऐसी आवाजें को सुनने का धैर्य और अवकाश कहां है ?बहुत पढ़–लिखकर भी आपको एक व्यवस्था के साथ खड़ा होना पड़ता है। हम लोग जब टीवी में नौकरी के लिए गए तो कहा गया कि ये लेख लिखने वाले खालिस प्रिंट के लोग हैं, टीवी में क्या करेंगें। किंतु हमने टीवी और उसकी भाषा को सीखा। हम गिरे या उन्नत हुए ऐसा नहीं कह सकते। हर माध्यम अपने लायक लोग खोजता और तैयार करता है। मैंने प्रिंट, डिजीटल और टीवी तीनों में काम किया। तीनों माध्यमों की जरूरतें अलग हैं। इसके साथ ही संस्थानों के चरित्र और उनकी जरूरतें भी अलग–अलग हैं। आप आकाशवाणी में जिस भाषा में काम करते हैं, वे बाजार में चल रहे एफएम रेडियो के लिए बेमतलब है। कोई ऐसी ट्रेनिंग नहीं जो आपको हर माध्यम के लायक बना दे। आप किसी एक काम को सीखिए उसी को अच्छे से करिए। जहां तक ट्रेंड जर्नलिस्ट की बात है, देश में बहुत अच्छे मीडिया के लोग हैं। बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। इतने बड़े देश, उसकी आकांक्षाओं, आतनांद, दर्द और सपनों को दर्ज करना बड़ी बात है, मीडिया के लोग इसे कर रहे हैं। अपने–अपने माध्यमों के अनुसार वे अपना कंटेंट गढ़ रहे हैं।

अतिवाद से बचे मीडिया–

टीवी में इस समय खेमे बन गए हैं। एक ओर सरकार के निंदक हैं और दूसरी ओर सुपारी किलर। आज हालात यह हैं कि तटस्थता जैसी कोई चीज बची ही नहीं है। आप देखें तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को उनके समर्थकों के साथ उनके विरोधियों ने भी बनाया है। मोदी का नाम इतना बड़ा हो गया है कि उनके समर्थन या विरोध दोनों से आपको फायदा मिलता है। अनेक ऐसे हैं जो मोदी को गालियां देकर अपनी दुकान चला रहे हैं, तो अनेक उनकी स्तुति से बाजार में बने हुए हैं। इसलिए मोदी समर्थक और मोदी विरोधी दो खेमे बन गए हैं। यह हो गया है।

समाज जीवन के हर क्षेत्र में यह बंटवारा दिखने लगा है। राजनीति, पत्रकारिता, शिक्षा, समाज सब जगह ये दिखेगा। इसमें अंधविरोध भी है और अंधसमर्थन भी । दोनों गलत है। किसी समाज में अतिवाद अच्छा नहीं। मैं यह मानता हूं कोई भी व्यक्ति जो देश के प्रधानमंत्री पद तक पहुंचा है वह सिर्फ गलत कर रहा है या उससे कोई भूल नहीं हो सकती, मैं इसे नहीं मानता। गुण और दोष के आधार पर समग्रता से विचार होना चाहिए। किंतु मोदी जी को लेकर एक अतिवादी दृष्टिकोण विकसित हो गया है। यहां तक कि मोदी विरोध करते–करते उनके विरोधी भारत विरोध और समाज विरोध तक उतर आते हैं। यह ठीक नहीं है। श्री नरेंद्र मोदी का व्यक्तित्व ऐसा है कि उन्होंने अपने विरोधियों और समथर्कों दोनों को रोजगार दे रखा है। उनका नाम लेकर और उन्हें गालियां देकर भी अच्छा व्यवसाय हो सकता है, यही ह्यब्रांड मोदीह्न की ताकत है। आपने कहा कि मोदी हावी रहते हैं, क्या मोदी ऐसा चाहते हैं ? आखिर कौन व्यक्ति होगा कि जो गालियां सुनना चाहता है। किसी का अंधविरोध अच्छी पत्रकारिता नहीं है। यह ह्यसुपारी पत्रकारिताह्न है। एक व्यक्ति जिसने अपनी जिंदगी के पचास वर्ष सार्वजनिक जीवन में झोंक दिए। जिसके ऊपर भ्रष्टाचार, परिवारवाद का कोई कलंक नहीं है। उसके जीवन में कुछ लोगों को कुछ भी सकारात्मक नजर नहीं आता तो यह उनकी समस्या है। नरेंद्र मोदी को इससे क्या फर्क पड़ता है। वे गोधरा दंगों के बाद वैश्विक मीडिया के निशाने पर रहे , खूब षड़यंत्र रचे गए पर आज उनके विरोधी कहां हैं और वे कहां हैं आप स्वयं देखिए। टीवी बहसों के नाम पर जो रहा है उसे देखकर निराशा ही होती है।

मैदान से गायब हैं लोग

मैदान में लोग कम दिखते हैं। मौके पर जाकर रिपोर्ट करने का अभ्यास कम दिखता है। इसके दो कारण हैं। पहला है सोशल मीडिया जिसके माध्यम से कम्युनिकेशन तुरंत हो जाता है। घटना के खबर, फोटो, इंटरव्यू आपके पहुंचने से पहले आ जाते हैं। सूचनाओं को भेजने की प्रक्रिया सरल और सहज हो गयी है। बातचीत करना आसान है। आप कहीं से भी किसी से भी बात कर सकते हैं। दूसरा यह है कि मीडिया बहुत बढ़ गया है। हर कस्बे तक मीडिया के लोग हैं। हो सकता है वे वेतनभोगी न हों, पर पत्रकार तो हैं। खबरें, वीडियो सब भेजते हैं। सो चीजें कवर हो रही हैं। ग्रामीण, जिला स्तर पर कवरेज का दायरा बहुत बढ़ा है। जिलों–जिलों के संस्करण और टीवी चैनलों के राज्य संस्करण आखिर खबरें ही दिखा रहे हैं। यह सही बात है कि पहले की तरह राजधानियों के संवाददाता, बड़े शहरों में विराजे पत्रकार अब हर बात के लिए दौड़ नहीं लगाते, तब जबकि बात बहुत न हो। जैसे पहलगाम हमला हुआ तो देश के सारे चैनलों के स्टार एंकर मैदान में दिखे ही। इसलिए इसे बहुत सरलीकृत करके नहीं देखना ठीक नहीं है। मीडिया की व्यापकता को देखना होगा। उसके विस्तार को देखना होगा। उसके लिए काम कर रहे अंशकालिक पत्रकारों की सर्वत्र उपस्थिति को भी दर्ज करना होगा। किंतु इस शोर में टीवी के लिए समय किसके पास है। मोबाइल अब मीडिया कन्वर्जेंस का सबसे बड़ा मंच है। इसलिए टीवी न्यूज हो या मनोरंजन टीवी सबके लिए चुनौती बहुत बड़ी है।

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल में जनसंचार विभाग के अध्यक्ष है।)

चीन का नया कानून दुनिया में बहस का बड़ा मुद्दा

अजय कुमार

भारत में समान नागरिक संहिता यानी यूनिफॉर्म सिविल कोड को लेकर बहस अभी जारी है, लेकिन इसी दौरान चीन ने ऐसा कानून लागू कर दिया है, जिसने पूरी दुनिया में नई चर्चा छेड़ दी है। पहली नजर में इसे देखकर लगता है कि यह भी किसी तरह का यूनिफॉर्म कानून है, लेकिन असलियत इससे कहीं ज्यादा गहरी है। 1 जुलाई 2026 से लागू हुआ एथनिक यूनिटी एंड प्रोग्रेस प्रमोशन लॉ केवल कानून नहीं बल्कि चीन की उस दीर्घकालिक रणनीति का हिस्सा है, जिसके जरिए वह देश में मौजूद अलग–अलग जातीय पहचानों को एक साझा चीनी राष्ट्रीय पहचान में ढालना चाहता है। यही वजह है कि जहां बीजिंग इसे राष्ट्रीय एकता का सबसे बड़ा कदम बता रहा है, वहीं संयुक्त राष्ट्र, एमनेस्टी इंटरनेशनल और कई मानवाधिकार संगठन इसे अल्पसंख्यकों की पहचान मिटाने की कानूनी शुरुआत मान रहे हैं। करीब 1.41 अरब आबादी वाले चीन में सरकार आधिकारिक तौर पर 56 जातीय समूहों को मान्यता देती है। इनमें लगभग 91 प्रतिशत आबादी हान समुदाय की है, जबकि बाकी 55 समुदायों में उइगर, तिब्बती, मंगोल, हुई, झुआंग, मियाओ और कई अन्य समूह शामिल हैं। इन समुदायों की अपनी भाषाएं, संस्कृति, धार्मिक परंपराएं और सामाजिक पहचान है। चीन का संविधान इन्हें अधिकार देता है, लेकिन पिछले एक दशक में राष्ट्रपति शी जिनपिंग की सरकार ने झोंगहुआ मिन्ज़ू यानी एकीकृत चीनी राष्ट्र की अवधारणा को सबसे ऊपर रखा है। अब उसी सोच को पहली बार एक व्यापक राष्ट्रीय कानून का रूप दे दिया गया है।

दरअसल यह कहानी आज से नहीं बल्कि कई दशक पहले शुरू हुई थी। 1984 में चीन ने रीजनल एथनिक ऑटोनॉमी लॉ बनाया था, जिसके तहत अल्पसंख्यक क्षेत्रों को अपनी भाषा और संस्कृति बचाने के कुछ अधिकार मिले थे। लेकिन 2014 के बाद स्थिति बदलनी शुरू हुई। शी जिनपिंग ने राष्ट्रीय सुरक्षा, आतंकवाद और अलगाववाद को सबसे बड़ी चुनौती बताते हुए नई नीति अपनाई। शिनजियांग में निगरानी व्यवस्था बढ़ाई गई, तिब्बत में शिक्षा व्यवस्था बदली गई, इनर मंगोलिया में स्थानीय भाषा की जगह मंदारिन को बढ़ावा दिया गया। उस समय इन फैसलों का विरोध हुआ, लेकिन सरकार पीछे नहीं हटी। अब वही सारी नीतियां एक नए कानून के जरिए स्थायी ढांचे में बदल गई हैं। इस कानून का सबसे बड़ा आधार भाषा है। चीन चाहता है कि पूरे देश में एक साझा भाषा के रूप में मंदारिन ही प्रमुख रहे। प्री–स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय तक शिक्षा का मुख्य माध्यम मंदारिन होगा। सरकारी कार्यालयों, सार्वजनिक संस्थानों और आधिकारिक संचार में भी इसी भाषा को प्राथमिकता दी जाएगी। सरकार का तर्क है कि साझा भाषा आर्थिक अवसर बढ़ाती है, रोजगार आसान बनाती है और राष्ट्रीय एकता मजबूत करती है। लेकिन विरोध करने वालों का कहना है कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं बल्कि पहचान का सबसे बड़ा आधार होती है। यदि किसी समुदाय की मातृभाषा धीरे–धीरे स्कूलों और सरकारी व्यवस्था से बाहर हो जाएगी तो आने वाली पीढ़ियों में उसकी सांस्कृतिक पहचान भी कमजोर पड़ जाएगी।

यही वजह है कि सबसे ज्यादा चिंता उइगर, तिब्बती और मंगोल समुदायों को लेकर जताई जा रही है। शिनजियांग में करीब 1.2 करोड़ उइगर मुसलमान, तिब्बत में लाखों तिब्बती बौद्ध और इनर मंगोलिया में बड़ी संख्या में मंगोल समुदाय रहता है। पिछले कुछ वर्षों से इन इलाकों में स्थानीय भाषाओं की जगह मंदारिन को बढ़ावा देने की नीति लागू की जा रही थी। अब नया कानून इस पूरी प्रक्रिया को कानूनी सुरक्षा देता है। विशेषज्ञों का कहना है कि इससे आने वाले वर्षों में स्थानीय भाषाओं का प्रयोग केवल घरों तक सीमित रह सकता है।कानून केवल भाषा तक सीमित नहीं है। इसमें स्कूलों, परिवारों, मीडिया, सामाजिक संगठनों और सरकारी संस्थाओं को चीनी राष्ट्रीय पहचान मजबूत करने की जिम्मेदारी दी गई है। पाठ्यक्रमों में राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय एकता और शी जिनपिंग की विचारधारा को बढ़ावा देने की बात कही गई है। अंतरजातीय विवाह को प्रोत्साहित करने की बात भी सामने आई है ताकि अलग–अलग समुदायों के बीच सामाजिक दूरी कम हो। चीन इसे सामाजिक समरसता बता रहा है, लेकिन आलोचकों का कहना है कि यह विविधता को खत्म कर एक जैसी पहचान बनाने की कोशिश है।

सबसे ज्यादा विवाद आर्टिकल–63 को लेकर है। यह प्रावधान कहता है कि यदि कोई चीनी नागरिक विदेश में रहकर भी चीन की जातीय एकता के खिलाफ गतिविधि करता है या अलगाववाद को बढ़ावा देता है तो उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जा सकती है। यानी कानून का प्रभाव केवल चीन की सीमा तक सीमित नहीं रहेगा। यही कारण है कि अमेरिका, यूरोप और कई मानवाधिकार संगठनों ने इस प्रावधान पर गंभीर सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि विदेशों में रहने वाले उइगर, तिब्बती और अन्य कार्यकर्ताओं को भी इस कानून के जरिए निशाना बनाया जा सकता है।संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार प्रमुख ने भी इस कानून पर चिंता व्यक्त की है। उनका कहना है कि यदि भाषा, धर्म, संस्कृति और शांतिपूर्ण अभिव्यक्ति पर अतिरिक्त नियंत्रण लगाया गया तो अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार मानकों का उल्लंघन हो सकता है। दूसरी ओर चीन इन आरोपों को पूरी तरह खारिज करता है। बीजिंग का कहना है कि यह कानून केवल आतंकवाद, चरमपंथ और अलगाववाद के खिलाफ है तथा इसका उद्देश्य सभी जातीय समूहों को समान अवसर देना है। चीन लगातार दावा करता रहा है कि शिनजियांग और तिब्बत में उसकी नीतियों से गरीबी कम हुई है, शिक्षा बढ़ी है और आर्थिक विकास तेज हुआ है।

असल सवाल यह है कि क्या यह कानून वास्तव में राष्ट्रीय एकता लाएगा या सांस्कृतिक पहचान को कमजोर करेगा। इतिहास बताता है कि किसी भी देश में साझा राष्ट्रीय पहचान बनाना आसान नहीं होता। भाषा, संस्कृति और परंपरा लोगों की भावनाओं से जुड़ी होती हैं। जब सरकारें इन्हें बदलने की कोशिश करती हैं तो अक्सर राजनीतिक और सामाजिक तनाव पैदा होता है। चीन का कहना है कि उसकी प्राथमिकता स्थिरता और विकास है, जबकि आलोचकों का मानना है कि स्थिरता के नाम पर सांस्कृतिक विविधता को सीमित किया जा रहा है।भारत में चल रही यूनिफॉर्म सिविल कोड की बहस और चीन के इस कानून की तुलना भी इसी वजह से चर्चा में है। लेकिन दोनों की प्रकृति पूरी तरह अलग है। भारत में यूसीसी का संबंध विवाह, तलाक, उत्तराधिकार और गोद लेने जैसे सिविल कानूनों से है। इसके विपरीत चीन का नया कानून भाषा, शिक्षा, संस्कृति, राष्ट्रीय पहचान और राजनीतिक विचारधारा से जुड़ा हुआ है। इसलिए दोनों को एक जैसा कानून कहना तथ्यात्मक रूप से सही नहीं होगा।

फिलहाल इतना तय है कि चीन ने केवल नया कानून लागू नहीं किया, बल्कि अपनी राष्ट्रीय नीति को नया कानूनी आधार दे दिया है। आने वाले वर्षों में इस कानून का असर केवल चीन तक सीमित नहीं रहेगा। विदेशों में रहने वाले चीनी मूल के लोगों, अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संस्थाओं और दुनिया की बड़ी लोकतांत्रिक सरकारों की नजर भी इसके हर कदम पर रहेगी। यदि यह कानून सांस्कृतिक विविधता और राजनीतिक असहमति के दायरे तक पहुंचा तो चीन और पश्चिमी देशों के बीच टकराव और बढ़ सकता है।लेकिन अगर बीजिंग इसे केवल आतंकवाद और अलगाववाद तक सीमित रखने में सफल रहा तो वह इसे अपनी सबसे बड़ी राजनीतिक उपलब्धियों में शामिल करेगा। फिलहाल दुनिया इसी सवाल का जवाब तलाश रही है कि यह कानून राष्ट्रीय एकता का नया मॉडल बनेगा या सांस्कृतिक पहचान पर सबसे बड़ा कानूनी नियंत्रण साबित होगा।

पासपोर्ट, आधार और वोटर आईडी भी नागरिकता का प्रमाण नहीं

कैपी मतिक

अगर आज अचानक कोई सरकारी अधिकारी आपसे कहे कि साबित कीजिए, आप भारत के नागरिक हैं, तो शायद आपको एक पल के लिए भी संदेह नहीं होगा। आप आत्मविश्वास के साथ अपना पासपोर्ट, आधार कार्ड, वोटर आईडी, पैन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस या राशन कार्ड सामने रख देंगे। आपको लगेगा कि इनमें से कोई–न–कोई दस्तावेज आपकी नागरिकता सिद्ध कर देगा। लेकिन यहीं से भारतीय पहचान व्यवस्था का सबसे बड़ा विरोधाभास शुरू होता है।

जिन दस्तावेजों के सहारे करोड़ों भारतीय अपनी पूरी ज़िंदगी जीते हैं, बैंक खाते खोलते हैं, संपत्ति खरीदते हैं, चुनाव में वोट डालते हैं, टैक्स भरते हैं, विदेश यात्रा करते हैं और सरकारी योजनाओं का लाभ उठाते हैं, वे सभी अलग–अलग प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए बनाए गए दस्तावेज हैं। भारतीय कानून में नागरिकता का प्रश्न अलग है और पहचान का प्रश्न अलग। यही वह बिंदु है, जहाँ आधुनिक भारत की सबसे जटिल पहेली सामने आती है।

हमारे पास पहचान के अनेक प्रमाण हैं, लेकिन नागरिकता का कोई एक सार्वभौमिक प्रमाण–पत्र नहीं है। यह केवल एक कानूनी तकनीकी खामी नहीं, बल्कि एक ऐसी व्यवस्था है, जिसने पहचान को टुकड़ों में बाँट दिया है। आधार आपको निवासी के रूप में पहचानता है, पैन आपको करदाता के रूप में, वोटर आईडी आपको मतदाता के रूप में और पासपोर्ट आपको अंतरराष्ट्रीय यात्रा का अधिकार देता है। लेकिन इनमें से कोई भी दस्तावेज हर परिस्थिति में नागरिकता का अंतिम और निर्विवाद प्रमाण नहीं माना जाता।

यही वह स्थिति है, जिसे अनेक विश्लेषक आइडेंटिटी ट्रैप कहते हैं—ऐसी व्यवस्था, जिसमें नागरिक के पास पहचान तो बहुत हैं, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर वही नागरिक अपनी मूल पहचान सिद्ध करने की चुनौती के सामने खड़ा हो सकता है। दरअसल, यह व्यवस्था अचानक पैदा नहीं हुई। इसकी जड़ें स्वतंत्र भारत के शुरुआती वर्षों में जाती हैं। 1955 का नागरिकता कानून ऐसे समय में बना था, जब देश विभाजन के घावों से उबर रहा था। उस समय प्राथमिकता नागरिकता के कानूनी नियम तय करने की थी, न कि प्रत्येक नागरिक को एक समान राष्ट्रीय पहचान–पत्र देना।

बाद के दशकों में अलग–अलग सरकारी संस्थानों ने अपनी–अपनी जरूरतों के अनुसार पहचान प्रणालियाँ विकसित कर लीं। चुनाव आयोग ने मतदाता पहचान–पत्र बनाया, आयकर विभाग ने पैन जारी किया, परिवहन विभाग ने ड्राइविंग लाइसेंस दिया और फिर डिजिटल युग में आधार सामने आया। हर संस्था ने अपना डेटाबेस तैयार किया, लेकिन किसी ने भी पूरे नागरिक जीवन को समेटने वाली एकीकृत नागरिक पहचान विकसित नहीं की। परिणाम यह हुआ कि भारत पहचान–पत्रों का देश बन गया, लेकिन नागरिकता का प्रश्न अब भी अलग कानूनी प्रक्रियाओं से जुड़ा रहा।

आज के डिजिटल युग में यह व्यवस्था केवल प्रशासनिक नहीं रही, बल्कि आर्थिक और राजनीतिक भी बन गई। आज आपकी पहचान केवल सरकारी रिकॉर्ड तक सीमित नहीं है। बैंक, मोबाइल कंपनियाँ, बीमा संस्थान, अस्पताल, ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म और सरकारी सेवाएँ—सभी आपकी डिजिटल पहचान का हिस्सा बनाते हैं। डेटा नई अर्थव्यवस्था का ईंधन बन चुका है। सुविधा और पारदर्शिता के साथ–साथ यह प्रश्न भी उठता है कि नागरिक की पहचान पर नियंत्रण किसका है, उसका डेटा किसके पास है, उसका उपयोग किस उद्देश्य से किया जा रहा है और उसकी सुरक्षा की जवाबदेही किसकी है। यही वह बिंदु है, जहाँ पहचान अधिकार का विषय होने के साथ–साथ बाजार और शासन—दोनों का संसाधन भी बन जाती है।

इसी पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) और नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) जैसी बहसें और अधिक संवेदनशील हो जाती हैं। समथर्कों का कहना है कि हर संप्रभु राष्ट्र को अपने नागरिकों और अवैध प्रवासियों के बीच स्पष्ट अंतर करने का अधिकार है। दूसरी ओर, आलोचक यह आशंका व्यक्त करते हैं कि यदि किसी नागरिक पर अपनी नागरिकता सिद्ध करने का दायित्व आ जाए और उसके पास अपेक्षित दस्तावेज न हों, तो सबसे अधिक कठिनाई गरीबों, विस्थापितों, ग्रामीणों, आदिवासियों और उन लोगों को होगी, जिनके दस्तावेज कभी बने ही नहीं या समय के साथ नष्ट हो गए। इसलिए यह बहस केवल कानून की नहीं, बल्कि प्रशासनिक क्षमता, सामाजिक न्याय और संवैधानिक अधिकारों की भी है।

इन परिस्थितियों में यह दावा करना कि पूरी व्यवस्था किसी एक गुप्त साज़िश का परिणाम है, उपलब्ध सार्वजनिक साक्ष्यों के आधार पर उचित नहीं कहा जा सकता। लेकिन यह प्रश्न अवश्य पूछा जा सकता है कि क्या दशकों में विकसित यह खंडित पहचान व्यवस्था नागरिकों के लिए पर्याप्त स्पष्ट और सुरक्षित है ? क्या एक लोकतंत्र में नागरिक को जीवन भर अलग–अलग पहचान–पत्र सँभालने के बाद भी अपनी नागरिकता को लेकर असमंजस में रहना चाहिए ? क्या राज्य की ज़िम्मेदारी नागरिक को बार–बार अपनी पहचान सिद्ध करने के लिए बाध्य करना है, या ऐसी व्यवस्था बनाना है, जिसमें नागरिक के अधिकार स्पष्ट, सुरक्षित और निर्विवाद हों ?

लोकतंत्र की असली परीक्षा पहचान–पत्रों की संख्या से नहीं होती, बल्कि इस बात से होती है कि नागरिक और राज्य के बीच विश्वास कितना मजबूत है। यदि नागरिक के पास अनेक पहचान–पत्र हों, फिर भी वह इस आशंका में जीए कि किसी दिन उससे उसकी नागरिकता का प्रमाण माँगा जा सकता है और उसके पास मौजूद दस्तावेज पर्याप्त नहीं माने जाएँगे, तो यह केवल कानूनी प्रश्न नहीं रह जाता। यह लोकतंत्र, प्रशासन और नागरिक अधिकारों के बीच संतुलन का प्रश्न बन जाता है।

आखिरकार, सवाल सिर्फ.इतना नहीं है कि हमारे पास कौन–सा पहचान–पत्र है। असली सवाल यह है कि क्या भारतीय नागरिक की पहचान उसके अधिकारों की गारंटी है, या वह केवल एक ऐसी प्रशासनिक प्रक्रिया का हिस्सा बन गई है, जिसमें नागरिक को समय–समय पर स्वयं को सिद्ध करते रहना पड़ता है ? यही प्रश्न आने वाले समय में भारत के लोकतंत्र, नागरिकता और डिजिटल शासन की दिशा तय करेगा।

पेंटिंग, ड्राइंग, मूर्तिकला के साथ अन्य कला में बनाएं करियर

आप पेंटिंग या ड्राइंग के साथ अपना स्पेशलाइजेशन कर सकते हैं। पेंटिंग डिपार्टमेंट से आप म्यूरल के लिए भी जा सकते हैं।

बदलते समय के साथ लोगों की सोच भी बदल रही है, खास कर ऐसे माता- पिता की जो अपने बच्चों पर बचपन से ही डॉक्टर-इंजीनियर बनने का दबाव डालते और इसे ही करियर के लिए सबसे बेहतर मानते थे। आज के समय में करियर के कई विकल्प खुल गए हैं। अब सिर्फ कॉमर्स या साइंस जैसे स्ट्रीम ही करियर की संभावना नहीं रह गया है। यही कारण है की मां-बाप अपने बच्चों को पसंद के अनुसार अपना करियर बनाने का मौका दे रहे हैं। इस समय फैशन एक ऐसा क्षेत्र है जो युवाओं को खुलकर जीने का मौका दे रहा है, जिससे आज युवा बैचलर ऑफ फाइन आर्ट की तरफ आकर्षित हो रहे हैं और पेंटिंग, ड्राइंग, मूर्तिकला के साथ अन्य कला में अपनी प्रतिभा निखारने के साथ अपना करियर बना रहे हैं।

क्या है बैचलर ऑफ फाइन आर्ट

बैचलर ऑफ फाइन आर्ट्स का स्वरूप बहुत बड़ा है। इसमें छात्रों को नृत्य, चित्र, फोटोग्राफी, फिल्म, वास्तुकला, आदि की शिक्षा दी जाती है। यह कोर्स आप 12वीं के बाद कर सकते हैं, ज्यादातर शैक्षणिक संस्थानों में बीएफए चार सालों का कोर्स होता है। शुरूआती सालों में आपको विजुअल आर्ट के सभी विषयों की जानकारी दी जाती है लेकिन अंतिम साल में आपको स्पेशलाइजेशन के रुप में एक विषय चुनना होता है।

जरूरी स्किल

अगर आप इस क्षेत्र में कैरियर बनाना चाहते है तो आपको कला की अच्छी समझ होनीं चाहिए। इसके लिए आपमें कल्पनाशीलता और क्रिएटिविटी जैसी स्किल की बेसिक जानकारी जरूरी है। इसके अलावा थिंकिंग पावर और ड्राइंग, पेंटिंग, स्कैचिंग की अच्छी समझ होना जरूरी है। वहीं इस फील्ड के लिए आप नए- नए एक्सपेरिमेंट करते रहना जरूरी है, जिससे आपकी कला का और विकास हो सके। एक पेंटर के रूप में, एक उम्मीदवार विभिन्न कलाकृतियां बना सकता है जैसे कि वाटर कलर पेंटिंग, ऑइल पेंटिंग, इंक वॉश पेंटिंग, ऐक्रेलिक पेंटिंग, पेस्टल कलर पेंटिंग, ग्लास पेंटिंग, एनकॉस्टिक पेंटिंग आदि। एक पेंटर आमतौर पर स्वतंत्र रूप से काम करता है या उसका प्रदर्शन करता है।

करियर

यह एक ऐसा सेक्टर है जहां पर छात्रों को बीएफए कोर्स करने के बाद आसानी से जॉब मिल जाती है। आज कल बैचलर ऑफ फाइन आर्ट्स में काफी बच्चों को दिलचस्पी होती है। बैचलर ऑफ फाइन आर्ट्स एडवरटाइजिंग कम्पनीज, आर्ट स्टूडियोज, बाउटिकेस आदि जगहों पर जॉब कर सकते हैं। आज के समय में बैचलर ऑफ फाइन आर्टस का क्षेत्र तेजी से आगे बढ़ रहा है। वहीं अच्छी पेंटिग्स भी लाखों- करोड़ो रुपए में बिक रही हैं, जिससे कलाकारों को उसका पूरा फायदा भी मिल रहा है। अगर आप चाहें तो आप इसमें एमए करके रिसर्च के लिए जा सकते हैं और इसके बाद आप किसी प्राइवेट संस्थान या किसी सरकारी कॉलेज में पढ़ा सकते हैं। वैसे तो कोर्स पूरा होने के पहले ही अगर आपने मेहनत की तो आपको सफलता मिलनी शुरू हो जाती है, ज्यादातर को प्राइवेट संस्थानों में, घरों और ऑफिसों, सरकार की तरफ से दीवारों को सजाने या उनपर पेंट, पोर्ट्रेट बनाने जैसे काम मिलने शुरू हो जाते हैं। फ्रीलांस आर्टिस्ट के तौर पर भी आप कार्य कर सकते हैं।

क्या होती है जॉब प्रोफाइल

एक पेंटर बनने के लिए आपको बीए इन ड्राइंग एंड पेंटिंग, बीएफए पेंटिंग, बीए इन पेंटिंग, बीए इन विजुअल आर्ट्स, बीएफए एप्लाइड आर्ट्स, एमएफए, एमए इन ड्राइंग एंड पेंटिंग, डिप्लोमा इन पेंटिंग का कोर्स करना पड़ेगा। जिसके बाद आप पेंटर, क्राफ्ट आर्टिस्ट, विजुअलाइजेशन प्रोफेशनल, इलेस्ट्रेटेर, डिजिटल डिजाइनर, ग्राफिक डिजाइनर, आर्ट प्रोफेशनल, आर्ट डायरेक्टर, आर्ट कंजरवेटरआर्ट, डनेपनउ, आर्ट रेस्टोरेशन स्पेसलिस्ट, मुरलिस्ट पेंटर, कॉमिक आर्टिस्ट, एंटीरियर डिजाइनर से जॉब प्रोफाइल पर कार्य कर सकते हैं।

ऑपरेशन्स मैनेजमेंट में बनाएं करियर

कॅरियर प्रबंधन प्रक्रिया लक्ष्यों और उद्देश्यों को स्थापित करने के साथ शुरू होती है। यह कार्य थोड़ा कठिन हो सकता है, जब व्यक्ति के पास कॅरियर के अवसरों और उनकी प्रतिभा और क्षमताओं के बारे में पूरी जानकारी नहीं होती है।

ऑपरेशन्स मैनेजमेंट आपके भविष्य के कॅरियर के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए संसाधनों के निवेश की एक लंबी प्रक्रिया है। कॅरियर प्रबंधन प्रक्रिया विभिन्न अवधारणाओं को अपनाती है, जैसे- आत्म-जागरूकता, कॅरियर विकास योजना और करियर अन्वेषण, जीवन भर सीखने की क्षमता और नेटवर्किंग। कॅरियर में अर्ध-कुशल से लेकर कुशल और अर्ध पेशेवर से पेशेवर तक के सभी प्रकार के रोजगार शामिल हैं। कॅरियर प्रबंधन प्रक्रिया लक्ष्यों और उद्देश्यों को स्थापित करने के साथ शुरू होती है। यह कार्य थोड़ा कठिन हो सकता है, जब व्यक्ति के पास कॅरियर के अवसरों और उनकी प्रतिभा और क्षमताओं के बारे में पूरी जानकारी नहीं होती है। हालांकि, पूरी करियर प्रबंधन प्रक्रिया परिभाषित लक्ष्यों और उद्देश्यों की स्थापना पर ही आधारित होती है।

मुख्य उद्देश्य

सामान्य शब्दों में परिचालन प्रबंधन किसी संगठन के लाभ को अधिकतम करने के उद्देश्य से एक कुशल तरीके से सामग्रियों और श्रम को वांछित वस्तुओं और सेवाओं में परिवर्तित करने से संबंधित है। यह उपलब्ध संसाधनों की खरीद और उपयोग करके उत्पादन को अधिकतम करता है, जिसमें कच्चे माल, उपकरण, प्रौद्योगिकी, सूचना और अन्य क्षेत्र शामिल हैं। उत्पादन की प्रक्रिया की योजना, डिजाइनिंग, आयोजन, नियंत्रण और अनुकूलन के साथ इसका अधिक सम्बन्ध होता है। संचालन प्रबंधन यह सुनिश्चित करता है कि एक इकाई कुशलतापूर्वक और सफलतापूर्वक इनपुट को आउटपुट में कैसे बदल देती है। यह स्पष्ट है कि संचालन प्रबंधन डिलीवरी ओरिएंटेड होता है। हालांकि, संचालन प्रबंधन को लॉजिस्टिक्स प्रबंधन के समान नहीं माना जाना चाहिए। संचालन प्रबंधन व्यापक है और लॉजिस्टिक्स प्रबंधन इसका एक हिस्सा है।

जॉब रोल्स

- सप्लाई चेन मैनेजर
- एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस मैनेजर
- प्लांट मैनेजर
- ह्यूमन रिसोर्सेज मैनेजर
- परचेस मैनेजर
- फैसिलिटी मैनेजर
- इन्वेंटरी कण्ट्रोल मैनेजर

रोजगार के अवसर

एक ऑपरेशन मैनेजर के रूप में इस क्षेत्र में कॅरियर बनाने की इच्छा रखने वालों के लिए रोजगार के ढेरों अवसर होते हैं। सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में संचालन प्रबंधकों के लिए बहुत स्कोप है। कुछ शीर्ष क्षेत्र इस प्रकार हैं :

- स्वास्थ्य
- कॉर्पोरेट व्यवसाय
- बहुराष्ट्रीय कंपनियां
- हॉस्पिटैलिटी
- विनिर्माण और खुदरा
- बीमा क्षेत्र
- वित्तीय संस्थाए
- सूचना प्रौद्योगिकी
- ई-कॉमर्स
- वेयरहाउसिंग
- निर्माण
- सलाहकारी फर्में

आज के समय में हाईटेक कार्य के रूप में जाना जाता है लाइब्रेरी साइंस का कोर्स

स्कूल कॉलेज हों या फिर सरकारी व प्राइवेट संस्थान हर जगह डॉक्यूमेंट्स को संभालने व संरक्षण करने के लिए लाइब्रेरी का उपयोग होता है। इस लाइब्रेरी में किताबों की देखभाल करने वाले को लाइब्रेरियन कहा जाता है।

अगर आपको भी किताबों से प्यार है और ज्ञान के भंडार के बीच अपना समय बीताना चाहते हैं, तो लाइग्ररियन बन सकते हैं, इसके लिए आपको लाइब्रेरी साइंस का कोर्स करना पड़ेगा, जिसके बाद आप लाइब्रेरी अटेंडेंट, लाइब्रेरी असिस्टेंट, जूनियर लाइब्रेरियन और लाइब्रेरियन जैसे पदों पर रहकर अच्छा करियर बना सकते हैं।

क्या है लाइब्रेरी सांइस का कोर्स

लाइब्रेरी साइंस का दायरा काफी बड़ा है, आज के समय यह एक हाईटेक कार्य के रूप में जाना जाता है। इसलिए इसमें करियर के अवसर भी काफी ज्यादा नजर आ रहे हैं। इस कोर्स के तहत छात्रों को लाइब्रेरी और इंफॉर्मेशन सिस्टम मैनेजमेंट, डॉक्यूमेंटेशन, मैनुस्क्रिप्ट, कैटलॉग, बिबलियोग्राफी आदि के बारे में पढ़ाया जाता है। इस क्षेत्र में अगर आप करियर बनाना चाहते हैं, तो आपको कंप्यूटर की बेसिक जानकारी भी होना जरूरी है। क्योंकि आजकल सारे डेटा और रिकॉर्ड कंप्यूटर पर ही रखे जाते हैं।

लाइब्रेरी साइंस में कोर्स

अगर आप लाइब्रेरी साइंस में करियर बनाना चाहते हैं तो आप डिप्लोमा या सर्टिफिकेट कोर्स कर सकते हैं। इसके लिए कैंडिडेट्स को किसी भी स्ट्रीम से 12वीं पास होना चाहिए। वहीं बैचलर इन लाइब्रेरी साइंस या बैचलर इन लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन साइंस के लिए आपको किसी भी स्ट्रीम से ग्रेजुएट होना होगा। बैचलर करने के बाद आम मास्टर इन लाइब्रेरी साइंस भी कर सकते हैं। इसके बाद आप एमफिल या पीएचडी कर रिसर्च या टीचिंग के सेक्टर में भी जा सकते हैं।

करियर स्कोप क्या है

लाइब्रेरी साइंस में इस समय जॉब्स की कमी नहीं है, लाइब्रेरी साइंस में ग्रेजुएट होने के बाद आप सरकारी और प्राइवेट दोनों सेक्टर में जॉब कर सकते हैं। जिस तरह से दिन- प्रतिदिन यूनिवर्सिटी और कॉलेज की संख्या बढ़ रहा है, ठीक उसी प्रकार इस सेक्टर में जॉब के अवसर भी बढ़ रहे हैं। आप किसी भी स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी, प्राइवेट संस्थान, प्राइवेट लाइब्रेरी, म्यूजियम आदि में लाइब्रेरियन के तौर पर काम कर सकते हैं। इसके अलावा न्यूजपेपर और न्यूज चैनल्स में भी लाइब्रेरियन की नियुक्ति की जाती हैं। अब तो कॉरपोरेट कंपनियों में भी लाइब्रेरी को प्रमोट किया जाता है, ऐसे में यहां पर भी अच्छी सैलेरी के साथ जॉब मिल सकती है। अब जमाना डिजिटल हो चुका है, इसलिए अब ऑनलाइन लाइब्रेरी या कंप्यूटर लाइब्रेरी, डिजिटल लाइब्रेरी का चलन तेजी से बढ़ा है।

करियर ऑप्शन क्या है

अब लाइब्रेरी साइंस काफी विकसित सेक्टर के रूप में जाना जाता है। जिसकी जरूरत हर जगह पर पड़ती है। जिसके कारण इस क्षेत्र में करियर के अनेक ऑप्शन हैं। आप कोर्स पूरा कर निम्न पदों पर रहकर करियर बना सकते हैं। जिसमें जूनियर लाइब्रेरियन, सहायक लाइब्रेरियन, डिप्टी लाइब्रेरियन, लाइब्रेरियन, लाइब्रेरी अटेंडेंट, पुस्तकालय सहायक, शोधकर्ता व वैज्ञानिक, सलाहकार, तकनीकी सहायक, अभिलेख प्रबंधक, सूचना केंद्र का प्रमुख, वरिष्ठ सूचना विश्लेषक, कानून लाइब्रेरियन, इंडेक्सर, सूचना वास्तुकार, पुरालेखपाल शामिल है।

कितनी मिलती है सैलरी

लाइब्रेरी साइंस में कोर्स करने के बाद आप प्रेशर के तौर पर 20 से 30 हजार रूपए कमा सकते हैं, इसके बाद जिस तरह से आपका अनुभ्व बढ़ेगा, उसी के अनुसार आपका पद और वेतन भी बढ़ेगा। वहीं अगर आपकी जॉब गवर्नमेंट सेक्टर में लग गया तो आप हर माह लाखों रुपए कमा सकते हैं।

आईआईटी में एडमिशन दिलाएंगी ये टिप्स

देश में इंजीनियर बनने की चाह रखने वाले हर स्टूडेंट की चाहत होती है कि वह इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) से इंजीनियरिंग करे। आईआईटी में एडमिशन के लिए स्टूडेंट्स को जेईई मेन एवं जेईई एडवांस परीक्षा पास करनी होती है। यहां हम आपको तैयारी के लिए कुछ आसान टिप्स बता रहे हैं।

बनाएं स्टडी प्लान

सबसे पहले सिलेबस के अनुसार अपना स्टडी प्लान बनाएं। जेईई मेन और जेईई एडवांस दोनों के सिलेबस लगभग समान होते हैं।

सेट करें वीकली और डेली टारगेट

स्टडी के लिए न्यूनतम घंटे तय करें। इसके साथ ही डेली या वीकली टारगेट सेट करें।

एनसीईआरटी की लें मदद

बेसिक तैयारी के लिए एनसीईआरटी बुक्स बहुत अच्छी मानी जाती हैं। इस कारण 11वीं से ही इन बुक्स से तैयारी करें।

क्लियर करें कॉन्सेप्ट

जेईई परीक्षा में आपके बेसिक्स की जांच होती है। पहले बेसिक कॉन्सेप्ट को समझें और इसके लिए थ्योरी पार्ट को पढ़ें।

स्मार्ट स्टडी

हार्ड वर्क के साथ ही स्मार्ट वर्क करें। इसके लिए नोट्स बनाएं, इंपॉर्टेंट प्वाइंट्स, फॉर्मूला, शॉर्टकट, रिएक्शन आदि के साथ स्मार्ट स्टडी करें।

मॉक टेस्ट पेपर

अपनी स्पीड, लर्निंग एक्यूरेसी और टाइम मैनेजमेंट स्किल को परखने के लिए ऑनलाइन मॉक टेस्ट पेपर सॉल्व करें।

कर सकते हैं कोचिंग

टफ और डाउट वाले प्रश्नों को आसानी से समझने के लिए आप कोचिंग भी ज्वॉइन कर सकते हैं।

पीसीएम का मतलब सिर्फ इंजीनियर बनना ही नहीं

छात्रों के बीच एक आम धारणा है कि 12वीं में मैथ्य लेने का मतलब है इंजीनियरिंग करना और साइंस लेने का मतलब है डॉक्टर बनना, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हर बच्चा सिर्फ इंजीनियर या डॉक्टर बनना चाहता है। कई बच्चे ऐसे भी हैं जो अलग फील्ड में जाना चाहते हैं।

बन सकते हैं पायलेट

अगर आप बचपन से उड़ते हुए प्लेन को देख कर मंत्रमुग्ध हो जाते हैं और इस क्षेत्र में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो आप पायलट पाठ्यक्रम भी चुन सकते है। इसका कोर्स प्राइवेट कॉलेज भी करवाते है। हवाई यात्रा सस्ती होने के साथ, विमान उद्योग तेज गति उन्नति कर रहा है और वाणिज्यिक पायलटों की आवश्यकता भी दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। यदि आप आकाश में उड़ना चाहते हैं और पायलट बनना कहते है तो यह कोर्स आपके लिए परफेक्ट है।

मर्चेंट नेवी

यह कोर्स आज के समय में बेहतर ऑप्शंस है। इसमें आप मरीन इंजीनियरिंग, नॉटिकल साइंस, शिप मेंटेनेंस आदि कोर्स कर सकते हैं। यह देश में सबसे अधिक सैलरी देने वाले कोर्सेज में से एक है। इसमें आपको कई देशों का सफर करने का मौका मिलता है तथा देश की सेवा करने का भी मौका मिलता है। काफी युवा छात्र मर्चेंट नेवी को अपना करियर बनाते है यह छात्रों की एक मनपसंद फील्ड है।

एनीमेशन का फील्ड

अगर आप क्रिएटिव हैं तो एनीमेशन के फील्ड में जा सकते हैं। 12वीं के बाद एनीमेशन की फील्ड में करियर बनाने का सपना काफी छात्रों का होता है। एनीमेशन की फील्ड काफी ज्यादा क्रिएटिव और मनोरंजक फील्ड है। इसमें छात्रों को कुछ नया करने को मिलता है। आज कल के समय में एनिमेटेड मूवीज, कार्टून्स काफी ज्यादा लोकप्रिय है ऐसे में एनीमेशन की फील्ड में बहुत कुछ कर दिखने का मौका है।

वीडियो गेम

कोरोना के बाद वीडियो गेम उद्योग बूस्ट पर चल रहा है। भारत में आज कई इंटरनेशन व नेशनल कंपनियां इस फील्ड में काम कर रही हैं। इस फील्ड में आपको कंप्यूटर लैंग्वेज पढ़ाई जाएगी और ग्राफिक डिजाइनिंग के बारे सिखाया जाता है। इस फील्ड में भी बहुत ज्यादा क्रिएटिविटी की जरुरत है। इस फील्ड में वेतन भी बहुत अच्छा है तथा भविष्य भी बहुत बढ़िया है।

एप डेवलपर

इस समय डिजिटल दुनिया में सब कुछ ऑनलाइन होता जा रहा है ऐसे में एप डेवलपर का भविष्य बहुत ही अच्छा है। आप एप डेवलपिंग का कोर्स ज्वाइन कर के अपना करियर इस फील्ड में बना सकते है। इसमें वेतन भी बहुत ज्यादा मिलता है। आजकल सभी लोग अपना व्यवसाय ऑनलाइन करते जा रहे है ऐसे में सभी अपना एप बनवाते है और अपने बिजनेस को या प्रोडक्ट तो प्रमोट करते है इसलिए यह भी एक बहुत अच्छा करियर ऑप्शन है।

सॉफ्टवेयर डेवलपर

आज के समय में यहां सैकड़ों आईटी फर्म हैं और दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। और ये आईटी फर्म एक बढ़िया 7 फिगर सैलरी देती है अपने सॉफ्टवेयर डेवलपर को। अमेजन, माइक्रोसॉफ्ट, गूगल ये सभी कम्पनीज सॉफ्टवेयर डेवलपर हायर करती है और अच्छा वेतन देती है। आजकल तो सभी बैंक्स भी ऑनलाइन हो गए है और लगभग सभी ऑफिसेस भी अपना सॉफ्टवेयर डेवेलप करवाते है। ऐसे में ये एक ऐसा करियर है जिसमे कभी पीछे नहीं मुड़ना पड़ेगा। सभी आईटी फरम्स सॉफ्टवेयर डेवलपर को रखती है और अच्छा वेतन देती है।

बीसीए भी है ऑप्शन

अगर आप 12 वीं के बाद करियर ऑप्शन देख रहे हैं तो आपके लिए बीसीए एक बढ़िया करियर ऑप्शन हो सकता है। अगर आपको कंप्यूटर में इंटरेस्ट है तो बीसीए आपके लिए बढ़िया चुनाव रहेगा। बीसीए करने के बाद आप किसी अच्छी आईटी कंपनी में जॉब कर सकते है और अगर आप बीसीए के बाद पोस्ट ग्रेजुएट एमसीए भी कर लेंगे तो कंप्यूटर की फील्ड में एक अच्छा करियर बना सकते है तथा उच्च वेतन की नौकरी भी मिल सकती है।

अब कॉमेडी करना मुश्किल हो गया है, रील्स-मीम्स कर रहे लोगों का मनोरंजन

अक्षय कुमार इन दिनों अपनी आगामी फिल्म 'वेलकम टू द जंगल' की रिलीज की तैयारी में लगे हैं। फिल्म का प्रमोशन जोरों पर चल रहा है। इस कॉमेडी फिल्म में बड़ी स्टारकास्ट नजर आएगी। अपनी जबरदस्त कॉमिक टाइमिंग के लिए मशहूर अक्षय कुमार का मानना है कि डिजिटल दौर में कॉमेडी करना ज्यादा मुश्किल हो गया है। जहां मीम्स और इंस्टाग्राम रील्स रोजाना लोगों का मनोरंजन कर रहे हैं। एक्टर ने स्टैंड-अप कॉमेडियंस की भी तारीफ की कि वे किस तरह लोगों को हंसाते हैं। आज हर जगह रील्स और मीम्स के जरिए कॉमेडी कंटेंट मौजूद है पीटीआई से बातचीत में अक्षय ने माना कि मौजूदा वक्त में कॉमेडी करना काफी मुश्किल हो गया है। उन्होंने कहा कि यह अब और भी मुश्किल हो गया है। आज हर जगह रील्स, मीम्स और कॉमेडी कंटेंट मौजूद हैं। लेकिन कॉमेडी एक बड़ी नदी की तरह है; यह कभी सूखती नहीं है। कॉमेडी के कई रूप हैं, जैसे फिजिकल कॉमेडी, सिचुएशनल कॉमेडी, स्लैपस्टिक कॉमेडी और डार्क ह्यूमर। एक्टर ने भारत में पिछले कुछ साल में कॉमेडी के नए तरीकों जैसे स्टैंड-अप के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा कि लोगों को हंसाने के अनगिनत तरीके हैं। अगर आप इंस्टाग्राम खोलें, तो आपको ढेर सारे मीम्स और मजेदार वीडियो मिल जाएंगे। लोग रोजाना कॉमेडी देखते-सुनते हैं। बहुत सारे कॉमेडी शो और टैलेंटेड स्टैंड-अप कॉमेडियन हैं जो नया कंटेंट बना रहे हैं। लेकिन लोगों को हंसाना आज भी सबसे मुश्किल कामों में से एक है। लोग अक्सर कॉमेडी को कमतर आंकते हैं। मैं स्टैंड-अप कॉमेडियन का बहुत सम्मान करता हूं। दर्शकों के सामने अकेले खड़े होकर लोगों को हंसाना वाकई बहुत मुश्किल काम है। 'वेलकम' फ्रैंचाइजी की तीसरी फिल्म है। इस फिल्म में अक्षय 30 से ज्यादा एक्टर्स की कास्ट को लीड कर रहे हैं, जिनमें सुनील शेट्टी, परेश रावल, रवीना टंडन, अरशद वारसी, लारा दत्ता, दिशा पाटनी, जैकलीन फर्नांडिस, आफताब शिवदसानी, तुषार कपूर, राजपाल यादव और जैकी श्रॉफ समेत कई कलाकार शामिल हैं।'

खुशाली कुमार ने 'दुल्हनिया ले आएगी' को बताया अपने करियर का खास किरदार

अभिनेत्री खुशाली कुमार अपनी आने वाली फिल्म 'दुल्हनिया ले आएगी' को लेकर काफी चर्चा में है। फिल्म के फर्स्ट लुक से उन्होंने लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा है। इस कड़ी में उन्होंने आईएएनएस से बात करते हुए अपने लुक और किरदार के बारे में विस्तार से बताया। बातचीत में खुशाली कुमार ने कहा, 'जैसे ही मैंने इस फिल्म की कहानी सुनी, मुझे लगा कि यह किरदार मेरे लिए ही बना है। मेरा किरदार कोई साधारण दुल्हन नहीं है, बल्कि उसका व्यक्तित्व बहुत मजबूत है। वह अपने फैसले खुद लेती है, अपने दिल की बात खुलकर कहती है और किसी भी बात को छुपाकर नहीं रखती। यह किरदार बहादुर भी है, भावनात्मक भी है और अपने अंदाज में जीने वाली है, और यही बात मुझे इस फिल्म की तरफ खींच लाई।' उन्होंने कहा, ''फिल्म का जो फर्स्ट लुक सामने आया है, वह सिर्फ शुरुआत है और असली कहानी इससे कहीं ज्यादा दिलचस्प है। मेरे किरदार में कई परतें हैं, जिन्हें दर्शक फिल्म के साथ धीरे-धीरे समझ पाएंगे। मुझे उम्मीद है कि दर्शक इस दुल्हन के अलग और अनोखे अंदाज को जरूर पसंद करेंगे।''

वहीं फिल्म के निर्देशक आकाशादित्य लामा ने भी इस फिल्म को लेकर अपनी सोच साझा की। उन्होंने कहा, ''दुल्हनिया ले आएगी' एक ऐसी कहानी है जो परिवार, रिश्तों और उनके बीच की उलझनों को मजेदार अंदाज में दिखाती है। आज के समय में रिश्तों की जटिलताएं बढ़ गई हैं, और इस फिल्म में उन्हीं भावनाओं को एक मनोरंजक रूप में पेश किया गया है।'' निर्देशक ने कहा, ''फिल्म की सबसे बड़ी खासियत इसका मुख्य किरदार है, यानी दुल्हन। यह दुल्हन पारंपरिक सोच से बिल्कुल अलग है। उसमें आत्मविश्वास है, थोड़ी शरारत है और वह कई बार दर्शकों को चौंका भी देती है। यह फिल्म हर उम्र के दर्शकों को जोड़ने की क्षमता रखती है क्योंकि इसमें हंसी, भावनाएं और परिवार का मेल है।'' फिल्म के पहले पोस्टर की बात करें तो उसमें खुशाली कुमार दुल्हन के अवतार में नजर आ रही हैं। उन्होंने ब्राइडल लहंगा पहना हुआ है, लेकिन उसके साथ सनग्लासेस लगाए हुए हैं। यह कॉम्बिनेशन ही फिल्म के किरदार की खासियत को दर्शाता है कि यह दुल्हन साधारण नहीं है, बल्कि अपने अंदाज में जीने वाली लड़की है। यह फिल्म 24 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

राही अनिल बर्वे की फिल्म में दिखेंगी जाह्नवी कपूर

जाह्नवी कपूर अब अपने करियर में एक बार फिर नया और चुनौतीपूर्ण मोड़ लेने की तैयारी में हैं। खबरों के मुताबिक, वह निर्देशक राही अनिल बर्वे की एक हाई-कॉन्सेप्ट हॉरर फिल्म के लिए बातचीत कर रही हैं। राही वही फिल्मकार हैं, जिन्होंने अपनी चर्चित फिल्म 'तुम्बाड' के जरिए भारतीय हॉरर सिनेमा को नया आयाम दिया था। सूत्रों के अनुसार, जाह्नवी और निर्माताओं के बीच बातचीत अंतिम चरण में है। जाह्नवी फिलहाल कई स्क्रिप्ट्स पर विचार कर रही हैं, लेकिन इस हॉरर प्रोजेक्ट में उनकी विशेष रुचि बताई जा रही है। फिल्म को बड़े स्केल पर तैयार किया जा रहा है और इसे क्रिएचर हॉरर की श्रेणी में रखा जा रहा है। बताया जा रहा है कि इसके लिए प्री-प्रोडक्शन और शुरुआती तैयारियां भी शुरू हो चुकी हैं।

ग्राम चिकित्सालय 2 से जुड़े निरहुआ

निरहुआ सीरीज ग्राम चिकित्सालय के दूसरे सीजन से जुड़कर वह काफी खुश हैं। हाल ही में बातचीत में निरहुआ ने सीरीज, अपने किरदार और ओटीटी के दौर में बदलती इंडस्ट्री पर बात की।

तब लगा मुझे भी करना चाहिए था

निरहुआ ने बताया कि ग्राम चिकित्सालय उन्हें शुरू से पसंद था और पहले सीजन में शामिल न हो पाना उन्हें कहीं न कहीं खटका भी था। उन्होंने कहा, 'जब मुझे ये सीरीज ऑफर हुई तो बहुत खुश हुआ। क्योंकि मैं इसका पहला सीजन ही करना चाहता था। जब पहला सीजन आया तो मैंने परिवार के साथ बैठकर देखा और मुझे बहुत आनंद आया। मैं घर में यही बात कर रहा था कि यार मैं भी करने वाला था लेकिन कुछ कारणों से नहीं कर पाया। फिर जैसे ही पता चला कि इसका दूसरा सीजन भी आ रहा है तो बहुत खुश हुआ। मैंने इसमें काम किया क्योंकि यह मेरा फेवरेट शो है।'

हर गांव में मेरे जैसा एक आदमी

अपने किरदार के बारे में बात करते हुए निरहुआ कहते हैं, 'मेरा किरदार ऐसा है जैसा आदमी लगभग हर गांव में मिल ही जाएगा। एक ऐसा दबंग टाइप का आदमी जिसको सब पता है कि कौन क्या करके आया है? सिस्टम कैसे चलता है? वो सब जानता है। हर जगह ऐसे लोग मिलते हैं और हमारा पाला भी बहुत पड़ता है। लोगों को देखने को मिलेगा कि गांव में दबंग आदमी असल में होता कैसा है।'

एक्टर की पढ़ाई 24 घंटे चलती रहती है

अपने किरदार की तैयारी पर निरहुआ ने कहा, 'एक्टर्स के लिए सीखने की प्रक्रिया कभी रुकती नहीं है। हां कुछ किरदारों के लिए ज्यादा वर्कशॉप नहीं करनी पड़ती क्योंकि रियल लाइफ में ऐसे लोग मिलते रहते हैं। हम अभिनेताओं की पढ़ाई 24 घंटा चलती रहती है। हम जहां भी जाते हैं लोगों को ऑब्जर्व करते हैं कि ये कैसे बात कर रहा है, कैसे बिहेव कर रहा है। फिर जब मौका मिलता है तो उसी को पर्दे पर उतारने की कोशिश करते हैं।'

फर्जी 2 को लेकर शाहिद कपूर ने साझा किया अहम अपडेट

शाहिद कपूर के फैंस के लिए एक खुशखबरी है। शाहिद ने अपनी सुपरहिट वेब सीरीज 'फर्जी' के दूसरे सीजन को लेकर कई अहम जानकारी साझा की है। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि यह सीरीज कब रिलीज होगी। शाहिद ने इंस्टाग्राम पर अपने फैंस के साथ लाइव बातचीत की। इस दौरान उन्होंने 'फर्जी 2' को लेकर कई अहम जानकारी दी। शाहिद ने बताया कि 'फर्जी' के दूसरे सीजन का काम लगभग पूरा हो चुका है और यह सीरीज अगले साल रिलीज हो सकती है। इस साल मार्च में शाहिद ने शूटिंग शुरू होने की जानकारी दी थी। इससे पहले फरवरी में उन्होंने निर्देशक जोड़ी 'राज और डीके' के साथ एक फोटो शेयर कर लिखा, 'यह लोग फिर से सक्रिय हो गए हैं।' मेकर्स ने भी सोशल मीडिया पर नोटों के ढेर की तस्वीर शेयर कर 'दूसरे राउंड' की पुष्टि की थी।

क्या जू. एनटीआर की फिल्म में विलेन बनेंगे शाहिद?

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, शाहिद कपूर जल्द ही साउथ सिनेमा में कदम रख सकते हैं। चर्चा है कि वे जूनियर एनटीआर की आने वाली फिल्म 'ड्रैगन' में खलनायक की भूमिका निभा सकते हैं। इस फिल्म का निर्देशन मशहूर डायरेक्टर प्रशांत नील कर रहे हैं। पहले इस रोल के लिए साउथ स्टार टोविनो थॉमस से बात चल रही थी, लेकिन उनके हटने के बाद अब मेकर्स शाहिद कपूर से बातचीत कर रहे हैं। हालांकि, अभी तक इस बात की कोई आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है।

मजबूत कहानी और सही निर्माता ही किसी प्रोजेक्ट को खास बनाते हैं

अली फजल इन दिनों वेब सीरीज 'राख' को लेकर चर्चा में हैं। यह सीरीज प्राइम वीडियो पर रिलीज हुई है। अली ने अपने रोल और इस सीरीज के बारे में बातें साझा कीं।

इस सीरीज को हां करने की वजह क्या रही?

यह कहानी आज के समय में बेहद प्रासंगिक है। हालांकि इसकी प्रेरणा एक कुख्यात केस से ली गई है, जो आज भी लोगों के जेहन में ताजा है। दिल्ली उस दौर की तुलना में काफी बदल चुकी है, लेकिन उस समय के कई लोग आज भी मिलते हैं और बताते हैं कि तब क्या-क्या हुआ था। हाल ही में किसी ने मुझे बताया कि उस केस के दोनों आरोपी मुंबई के जेवीपीडी इलाके में भी देखे गए थे। यही बात इस मामले को और चौंकाने वाली बनाती है। साथ ही यह सवाल भी उठता है कि आज ऐसे कितने मामले हो रहे हैं। मेरे हिसाब से सिनेमा की जरूरत तब पड़ती है, जब लोगों को जागरूक करना हो कि एक परिवार के साथ जो हुआ, वह किसी और के साथ न हो। वहीं, जय प्रकाश का किरदार मुझे बहुत दिलचस्प लगा।

सब-इंस्पेक्टर के किरदार में ढलने के लिए आपने क्या-क्या किया?

इस किरदार को गढ़ने में मेरी पूरी टीम का बड़ा योगदान रहा। हम सभी ने इस पर काफी रिसर्च की और बहुत पढ़ाई की। शुरुआत में हमने सिर्फ सीन पढ़े, फिर धीरे धीरे किरदार की दुनि दुनिया में उतरते गए। हमने समझने की कोशिश की कि अगर यह उस दौर का व्यक्ति है, तो उसकी फितरत कैसी होगी, उसकी आदतें क्या होंगी। कहानी इमरजेंसी के बाद के समय की है, इसलिए उस दौर में पुलिस कैसे काम करती थी? इस पर भी काफी चर्चा हुई। उदाहरण के तौर पर उस समय दिल्ली में कॉन्स्टेबल्स को शॉर्ट्स पहनने से मना कर दिया गया था। लोगों की भाषा भी काफी पुख्ता थी और वे ज्यादातर हिंदुस्तानी में बात करते थे। मेरे हिसाब से इन सभी पहलुओं को गहराई से समझना इस किरदार की तह तक पहुंचने के लिए बेहद जरूरी था।

दर्शकों पर इस सीरीज का क्या प्रभाव पड़ा?

मुझे लोगों से बहुत अलग-अलग और दिलचस्प प्रतिक्रियाएं मिल रही हैं। आमतौर पर ऐसी कहानियों में या तो सिर्फ अपराधी का दृष्टिकोण दिखाया जाता है या फिर पुलिस का, लेकिन इस सीरीज में दोनों के बीच संतुलन रखा गया है। मेरे लिए इसकी सबसे अहम बात 'वर्दी की बंदिश' है। जब आप वर्दी पहनते हैं तो आपके काम करने की एक सीमा तय हो जाती है और आपको उसी दायरे में रहकर काम करना पड़ता है। लोगों को लगता है कि पुलिस के पास बहुत आजादी होती है, लेकिन हकीकत हमेशा वैसी नहीं होती। इस सीरीज में मेरा किरदार भी एक आम इंसान की तरह नजर आता है जो इस केस को पूरी शिद्दत और ईमानदारी से सुलझाने की कोशिश करता है।

शूटिंग का अनुभव कैसा रहा?

मेरे अनुसार शूटिंग करीब डेढ़ से दो महीने तक चली। हमारे निर्देशकों की यह स्पष्ट इच्छा थी कि हम वास्तविक लोकेशनों पर ही शूटिंग करें और सेट न बनाए जाएं। इसलिए ज्यादातर शूट असली स्थानों पर हुआ। हमने काफी शूटिंग आगरा और उसके आसपास के इलाकों में की। इसके बाद मुंबई में काम किया और फिर मुख्य शूटिंग दिल्ली में हुई। दिलचस्प बात यह रही कि दिल्ली का शेड्यूल मार्च में रखा गया था, जब वहां काफी गर्मी रहती है।

क्या आज के समय में स्टार कास्ट से ज्यादा फिल्म की कहानी केंद्र में आ रही है?

जी, मैं इससे पूरी तरह सहमत हूं। जिस दिन कहानी किसी फिल्म की असली हीरो बन जाएगी, उस दिन पूरा खेल बदल जाएगा। उसके बाद अगर उस कहानी के साथ अच्छे कलाकार जुड़ जाएं, तो बात और बेहतर हो जाती है। मेरा मानना है कि अगर कहानी मजबूत नहीं है, तो सिर्फ किसी बड़े नाम के भरोसे पूरी फिल्म को नहीं बेचा जा सकता। इसके अलावा मैं किसी भी स्क्रिप्ट का चयन काफी सोच-समझकर करता हूं।

प्रदेश में अव्वल बना बेमेतरा : पीएम किसान हितग्राहियों के एग्रीस्टैक पंजीयन में हासिल किया प्रथम स्थान

93 प्रतिशत पीएम किसान लाभार्थियों का एग्रीस्टैक पंजीयन पूर्ण, शेष कृषकों से शीघ्र पंजीयन कराने की अपील

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

जिले में किसानों को शासन की योजनाओं का लाभ समय पर और पारदर्शी तरीके से उपलब्ध कराने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज हुई है। एग्रीस्टैक परियोजना के तहत प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के हितग्राहियों के पंजीयन में बेमेतरा जिले ने पूरे प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यह उपलब्धि जिला प्रशासन, कृषि विभाग, राजस्व विभाग, सहकारी समितियों तथा मैदानी अमले के समन्वित प्रयासों का परिणाम है।

जिले में एग्रीस्टैक परियोजना के अंतर्गत किसानों के पंजीयन का कार्य निरंतर गति से किया जा रहा है। अब तक 1 लाख 70 हजार से अधिक कृषकों का सफलतापूर्वक एग्रीस्टैक पंजीयन कर उनकी किसान आईडी तैयार की जा चुकी है। जिले में कुल कृषकों की संख्या लगभग 1.86 लाख है।

हालांकि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना का लाभ पात्र कृषक परिवारों को दिया जाता है, जिनकी संख्या जिले में लगभग 1.20 लाख है।

उल्लेखनीय है कि शासन द्वारा धान उपार्जन के लिए एग्रीस्टैक पंजीयन को अनिवार्य किया जा चुका है। इसके साथ ही प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत पंजीयन एवं आगामी किस्तों के भुगतान के लिए भी एग्रीस्टैक किसान आईडी अनिवार्य कर दी गई है। जिन लाभार्थियों की एग्रीस्टैक आईडी नहीं बनेगी, उन्हें भविष्य में योजना की किस्त प्राप्त करने में कठिनाई हो सकती है। जिले में अब तक 93 प्रतिशत पीएम किसान सम्मान निधि योजना के लाभार्थियों का एग्रीस्टैक पंजीयन पूर्ण हो चुका है। इसी उत्कृष्ट उपलब्धि के कारण बेमेतरा जिला प्रदेश में प्रथम स्थान पर पहुंचा है।

जानकारी के अनुसार लगभग 1301 पीएम किसान लाभार्थियों के भूमि अभिलेख संयुक्त खाते में होने के कारण उनका एग्रीस्टैक पंजीयन लंबित था। ऐसे प्रकरणों में संबंधित तहसीलदारों द्वारा भू-अभिलेखों का अद्यतन कराते हुए तेजी से पंजीयन की प्रक्रिया पूरी की जा रही है। इसके अतिरिक्त लगभग 4195 लाभार्थियों का पंजीयन मोबाइल फोन की अनुपलब्धता, अन्य राज्यों में पलायन तथा अन्य तकनीकी एवं व्यक्तिगत कारणों से अभी शेष है। जिला प्रशासन इन सभी लाभार्थियों का पंजीयन शीघ्र पूर्ण कराने के लिए विशेष अभियान चला रहा है।

जिला प्रशासन ने सभी शेष पात्र किसानों से अपील की है कि वे बिना विलंब अपने निकटतम चॉइस सेंटर, सहकारी समिति अथवा निर्धारित पंजीयन केंद्र में जाकर एग्रीस्टैक पोर्टल पर अपना पंजीयन कराएं, ताकि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि सहित शासन की अन्य किसान हितैषी योजनाओं का लाभ समय पर प्राप्त होता रहे।

अधिक जानकारी एवं आवश्यक सहयोग के लिए किसान अपने क्षेत्र के ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी, पटवारी अथवा संबंधित कृषि विभाग के अधिकारियों से संपर्क कर सकते हैं। जिला प्रशासन ने विश्वास व्यक्त किया है कि शीघ्र ही जिले के शत-प्रतिशत पात्र किसानों का एग्रीस्टैक पंजीयन पूर्ण कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया जाएगा।

खास खबर

सेवा सेतु पोर्टल की डिजिटल सुविधा से भूपेन्द्र को मिली बड़ी राहत, घर बैठे मिला ऑनलाइन विवाह प्रमाण पत्र

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

राजनांदगांव जिले के निवासी भूपेन्द्र कुमार उमरे एवं उनकी पत्नी श्रीमती ललिता उमरे को सेवा सेतु पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन विवाह पंजीकरण एवं विवाह प्रमाण पत्र प्राप्त होने से सरकारी सेवाओं एवं योजनाओं का लाभ लेने में बड़ी सुविधा मिली है। भूपेन्द्र कुमार उमरे ने 26 मई 2026 को सेवा सेतु पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन विवाह पंजीकरण एवं प्रमाण पत्र के लिए आवेदन किया। निर्धारित प्रक्रिया के तहत आवेदन का परीक्षण कर शीघ्र ही उनका आवेदन स्वीकृत किया गया और 15 जून को ऑनलाइन विवाह प्रमाण पत्र उपलब्ध हो गया। श्री उमरे ने बताया कि उनका विवाह प्रमाण पत्र पहले ऑफलाइन जारी हुआ था, लेकिन अनेक शासकीय योजनाओं एवं अन्य आवश्यक कार्यों के लिए ऑनलाइन विवाह पंजीकरण प्रमाण पत्र की आवश्यकता पड़ती थी। ऑनलाइन प्रमाण पत्र उपलब्ध नहीं होने के कारण उन्हें कई बार परेशानी का सामना करना पड़ता था और कुछ योजनाओं का लाभ लेने में भी कठिनाई आती थी।

सेवा सेतु पोर्टल की जानकारी मिलने के बाद उन्होंने आवश्यक दस्तावेजों के साथ ऑनलाइन आवेदन किया। आवेदन प्रक्रिया सरल, पारदर्शी और सुविधाजनक रही। बिना बार-बार कार्यालयों के जाए बिना उनका विवाह प्रमाण पत्र समय पर जारी होकर ऑनलाईन प्राप्त हो गया। इससे उनके समय और धन दोनों की बचत हुई तथा सरकारी सेवाओं तक उनकी पहुंच और अधिक आसान हो गई। भूपेन्द्र कुमार उमरे एवं श्रीमती ललिता उमरे ने सेवा सेतु पोर्टल की इस सुविधा की सराहना करते हुए कहा कि यह डिजिटल माध्यम आम नागरिकों के लिए अत्यंत उपयोगी है। उन्होंने अन्य लोगों से भी सेवा सेतु पोर्टल के माध्यम से विभिन्न शासकीय सेवाओं का लाभ लेने की अपील की तथा इस जनहितकारी पहल के लिए शासन-प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त किया।

दो विपत्ति ग्रस्त परिवार को 50 हजार रूपए की आर्थिक अनुदान सहायता राशि स्वीकृत

कवर्धा। कलेक्टर गोपाल वर्मा के निर्देश पर पंडरिया एसडीएम संदीप ठाकुर ने दो विपत्ति ग्रस्त परिवारों को 50 हजार रूपए की आर्थिक अनुदान सहायता राशि की स्वीकृति प्रदान की है। एसडीएम संदीप ठाकुर ने सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो जाने पर ग्राम बदुराकछार निवासी सुशांत की मृत्यु हो जाने पर उनके पिता रामचंद को, ग्राम रवेली निवासी राहुल की मृत्यु हो जाने पर उनके पत्नी आंचल को 25-25 हजार रूपए की आर्थिक अनुदान सहायता राशि की स्वीकृति प्रदान की है।

कृषकों से सार्वजनिक सड़कों पर लोहे के केज व रिंग लगे ट्रैक्टरों का संचालन नहीं करने की अपील

राजनांदगांव। अतिरिक्त क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी ने कृषकों से कृषि कार्य में उपयोग किए जाने वाले ऐसे सभी ट्रैक्टर, जिनके पहियों में लोहे के केज व रिंग लगाए गए हो, उनका संचालन सार्वजनिक सड़कों, सीमेंट एवं डामरीकृत मार्गों, राष्ट्रीय व राज्य राजमार्गों पर नहीं करने की अपील की है। उन्होंने बताया कि लोहे के केज व रिंग लगे टैक्टर के पहियों से सीमेंट एवं डामरीकृत सड़कों को गंभीर क्षति पहुंचती है। साथ ही ऐसे वाहनों के कारण सड़क पर अन्य वाहनों के आवागमन में बाधा उत्पन्न होती है, जिससे मार्ग संकरा प्रतीत होता है और आम नागरिकों की सुरक्षा प्रभावित होती है। इस स्थिति में सड़क दुर्घटनाओं की आशंका भी बढ़ जाती है। उन्होंने किसानों से पहियों में लोहे के केज व रिंग लगे ट्रैक्टर का उपयोग केवल खेतों में कृषि कार्य के दौरान ही करने कहा है। खेत में कार्य पूर्ण होने के बाद केज व्हील को वहीं उतारकर सामान्य पहियों के साथ ही ट्रैक्टर का संचालन सार्वजनिक मार्गों पर करें। इससे सड़कों की सुरक्षा एवं गुणवत्ता बनी रहेगी तथा आमजन सुरक्षित एवं सुगम आवागमन कर सकेंगे।

ग्रामीण विकास को नई दिशा देगी वीबी-जी राम जी योजना-उपमुख्यमंत्री

कबीरधाम के गंडईखुर्द से वीबी-जी राम जी योजना का हुआ राज्य स्तरीय शुभारंभ

नई दृष्टिबिंदु / कबीरधाम

ग्रामीण परिवारों को रोजगार और आजीविका की नई गारंटी देने वाली विकसित भारत गारंटी फॉर रोजगार एवं आजीविका मिशन ग्रामीण (वीबी-जी राम जी) योजना का राज्य स्तरीय शुभारंभ कबीरधाम जिले के बोड़ला विकासखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत गंडईखुर्द से किया गया। कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री एवं पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री विजय शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। राष्ट्रीय स्तर पर योजना का शुभारंभ केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आंध्र प्रदेश के तिरुपति से किया। इस दौरान वे वर्चुअल माध्यम से ग्राम पंचायत गंडईखुर्द में आयोजित राज्य स्तरीय शुभारंभ समारोह से भी जुड़े रहे।

केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि आज से विकसित भारत गारंटी फॉर रोजगार एवं आजीविका मिशन ग्रामीण (वीबी-जी राम जी) योजना लागू हो रही है। इस योजना का उद्देश्य है कि देश का कोई भी गरीब काम के अभाव में बेरोजगार न रहे। उन्होंने इस महत्वपूर्ण पहल के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि योजना से जहां ग्रामीण मजदूरों को 125 दिनों का रोजगार मिलेगा, वहीं गांवों में विकास कार्यों को भी नई गति मिलेगी और ग्रामीण क्षेत्रों की तस्वीर बदलेगी। श्री चौहान ने कहा कि मजदूरों के पसीने का सम्मान हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। गरीबों की सेवा ही हमारे लिए भगवान की सेवा है।

उपमुख्यमंत्री एवं पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री विजय शर्मा ने कहा कि आज पूरे देश में विकसित भारत गारंटी फॉर रोजगार एवं आजीविका मिशन (वीबी-जी राम जी) योजना का शुभारंभ हो रहा है और छत्तीसगढ़ में इसका राज्य स्तरीय शुभारंभ ग्राम पंचायत गंडईखुर्द से किया गया है। इस अवसर पर उन्होंने प्रदेश में योजना के तहत पहले कार्य के रूप में ग्राम पंचायत गंडईखुर्द में शेड निर्माण के प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की। उन्होंने कहा कि यह केवल रोजगार उपलब्ध कराने की योजना नहीं, बल्कि विकसित गांव से विकसित भारत के निर्माण का अभियान है। वर्ष 2047 तक विकसित भारत के संकल्प को साकार करने के लिए प्रत्येक गांव और पंचायत का समग्र विकास आवश्यक है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने छत्तीसगढ़ के लिए 3,300 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है, जिससे विभिन्न विकास कार्य किए जाएंगे और रोजगार की कोई कमी नहीं रहेगी।

उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने बताया कि योजना के तहत 318 प्रकार के कार्यों को शामिल किया गया है। इनमें जल संरक्षण से जुड़े 107, ग्रामीण अधोसंरचना के 90, आजीविका संवर्धन के 86 तथा आपदा प्रबंधन से संबंधित 35 प्रकार के कार्य शामिल हैं। उन्होंने कहा कि अब जॉब कार्ड के स्थान पर जीआरजी कार्ड जारी किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जॉब कार्ड में केवाईसी कराने में छत्तीसगढ़ देश में अग्रणी राज्यों में है।

उपमुख्यमंत्री ने कहा कि योजना के तहत बाउंड्री वॉल, किचन शेड, शौचालय, सामुदायिक पशु शेड, सोलर एवं स्ट्रीट लाइट, ग्रामीण चौपाल, हाईमास्ट लाइट, स्व-सहायता समूहों के लिए वर्क शेड, कोल्ड स्टोरेज, खाद एवं खाद्यान्न गोदाम, सामुदायिक आटा चक्की, कृषि प्रसंस्करण केंद्र और हैंडलूम प्रोसेसिंग केंद्र जैसे कार्य भी किए जा सकेंगे। इससे रोजगार के साथ-साथ ग्रामीण आजीविका को भी मजबूती मिलेगी। उन्होंने कहा कि विकसित भारत का संकल्प तभी साकार होगा, जब गांव आत्मनिर्भर और समृद्ध बनेंगे। इसी उद्देश्य से गांवों को ए, बी और सी श्रेणी में विभाजित कर योजनाबद्ध विकास किया जाएगा। उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ़ में पिछले ढाई वर्षों में 11 लाख आवासों का निर्माण पूरा किया गया है, जो ग्रामीण विकास के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। उन्होंने सभी जनप्रतिनिधियों और ग्रामीणों से अपील की कि वे व्यापक सोच के साथ अपने गांवों की विकास कार्ययोजना तैयार करें, ताकि वर्ष 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष विशेष पटेल, छत्तीसगढ़ कृषक कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष सुरेश चंद्रवंशी, पुलिस जवाबदेही प्राधिकरण सदस्य भगत पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष ईश्वरी साहू, जिला पंचायत उपाध्यक्ष कैलाश चंद्रवंशी, जिला पंचायत सदस्य राम कुमार भट्ट, जिला पंचायत सभापति श्रीमती पूर्णिमा मनीराम साहू, जनपद पंचायत बोड़ला की अध्यक्ष श्रीमती बालिका रामकिंकर वर्मा, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष विदेशी राम धुर्वे, उपाध्यक्ष नंद श्रीवास, विजय पाटिल, जनपद सदस्य श्रीमती मधु प्रीतम वर्मा, आयुक्त मनरेगा तारन प्रकाश सिन्हा, कलेक्टर गोपाल वर्मा, पुलिस अधीक्षक धर्मेन्द्र सिंह, डीएफओ निखिल अग्रवाल, जिला पंचायत सीईओ अभिषेक अग्रवाल सहित जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

भारत सरकार के विकसित भारत-2047 के संकल्प को ग्राम स्तर तक साकार करने तथा योजनाबद्ध, तकनीक आधारित एवं समग्र ग्रामीण विकास को गति देने के उद्देश्य से आज विकासखंड साजा के सभाकक्ष में वीबी-जी राम जी के शुभारंभ अवसर पर राष्ट्रीय स्तरीय जन सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण विकासखंड स्तरीय आयोजन में किया गया, जिसमें जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, पंचायत प्रतिनिधियों, स्व-सहायता समूह की महिलाओं तथा बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने सहभागिता की।

कार्यक्रम का राष्ट्रीय स्तर पर शुभारंभ भारत सरकार के केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा किया गया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि वीबी-जी राम जी गांवों के समग्र एवं सतत विकास की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है। इसके माध्यम से प्रत्येक ग्राम पंचायत अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप दीर्घकालिक विकास योजना तैयार करेगी, जिससे आधारभूत सुविधाओं का विस्तार, रोजगार के अवसरों में वृद्धि, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी। उन्होंने कहा कि आधुनिक तकनीक एवं डिजिटल मॉनिटरिंग के माध्यम से विकास कार्यों में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित की जाएगी।

विकासखंड साजा में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता साजा विधायक ईश्वर साहू ने की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के विकसित भारत के विजन तथा मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार गांव, गरीब, किसान एवं महिलाओं के सशक्तिकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। वीबी-जी राम जी के प्रभावी क्रियान्वयन से ग्राम पंचायतों के विकास कार्यों को नई दिशा मिलेगी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं का विस्तार और जनकल्याणकारी योजनाओं का बेहतर लाभ सुनिश्चित होगा। उन्होंने कहा कि पंचायत प्रतिनिधियों, अधिकारियों एवं ग्रामीणों की सक्रिय भागीदारी से यह अभियान एक जन आंदोलन का रूप लेगा और आत्मनिर्भर, स्वच्छ, समृद्ध एवं विकसित गांवों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

इस अवसर पर पूर्व विधायक ने कहा कि 1 जुलाई से प्रारंभ हुआ वीबी-जी राम जी भारत सरकार की दूरदर्शी पहल है, जिसका उद्देश्य वर्ष 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को ग्राम स्तर पर साकार करना है। ग्राम पंचायतों की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार की जाने वाली विकास कार्य योजना गांवों के सर्वांगीण विकास का मजबूत आधार बनेगी। आधुनिक तकनीक के माध्यम से योजनाओं की निगरानी, पारदर्शिता और प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित होगा।

कार्यक्रम में जनपद पंचायत के अधिकारियों द्वारा वीबी-जी राम जी की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया गया कि यह पहल ग्राम पंचायतों में दीर्घकालिक विकास योजना तैयार करने, विभिन्न विभागों के समन्वय से कार्यों के क्रियान्वयन तथा जनभागीदारी को बढ़ावा देने का प्रभावी माध्यम बनेगी। कार्यक्रम के दौरान महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) के प्रभावी क्रियान्वयन में उल्लेखनीय योगदान देने वाले सरपंचों, तकनीकी सहायकों एवं मेटों को प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। उक्ताओं ने कहा कि ऐसे सम्मान पंचायत स्तर पर उत्कृष्ट कार्य संस्कृति को बढ़ावा देते हैं और अन्य पंचायतों के लिए प्रेरणा का कार्य करते हैं।

कलेक्टर सुश्री प्रतिष्ठा ममगाईं ने जिलेवासियों एवं पंचायत प्रतिनिधियों से अपील की है कि वे इस महत्वाकांक्षी अभियान में सक्रिय सहभागिता निभाते हुए ग्राम पंचायतों की विकास योजनाओं को सफल बनाने में सहयोग करें। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन शासन की सभी जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने तथा गांवों के समग्र विकास के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रहा है। कार्यक्रम में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत बेरला सोमनाथ साहू, विभिन्न विभागों के अधिकारी-कर्मचारी, जनप्रतिनिधि, सरपंच, सचिव, रोजगार सहायक, तकनीकी सहायक, मेट, स्व-सहायता समूह की महिलाएं तथा बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन एवं आभार प्रदर्शन मुख्य कार्यपालन अधिकारी सोमनाथ साहू द्वारा किया गया।

विकसित भारत का संकल्प तभी साकार होगा, जब हर गांव और हर पंचायत का होगा विकास - विधायक बोहरा

पंडरिया विधायक श्रीमती भावना बोहरा ने कहा कि आज का दिन प्रदेश के लिए ऐतिहासिक है और सभी लोग इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने हैं। उन्होंने कहा कि केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने वीबी-जी राम जी योजना के प्रभावी क्रियान्वयन की विस्तृत जानकारी दी है। इस योजना के तहत मनरेगा में अब ग्रामीण परिवारों को 125 दिनों का रोजगार मिलेगा तथा अकुशल श्रमिकों की दैनिक मजदूरी 261 रुपये से बढ़ाकर 300 रुपये प्रतिदिन कर दी गई है। उन्होंने बताया कि मनरेगा के अंतर्गत 318 प्रकार के कार्यों को शामिल किया गया है, जिनमें जन संरक्षण और विभिन्न निर्माण कार्य भी किए जा सकेंगे। श्रीमती बोहरा ने कहा कि विकसित भारत का संकल्प तभी साकार होगा, जब हर गांव और हर पंचायत का विकास होगा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में राज्य सरकार गांवों के समग्र विकास के लिए निरंतर कार्य कर रही है। साथ ही उन्होंने कहा कि आज हुई बारिश किसानों के लिए शुभ संकेत और प्रकृति का आशीर्वाद है। योजना की सफलता के लिए इसकी जानकारी और प्रभावी क्रियान्वयन को प्रत्येक पंचायत तक पहुंचाना आवश्यक है।

बोर्ड ऑफ विजिटर्स ने किया बेमेतरा जिला जेल का व्यापक निरीक्षण, दिए आवश्यक निर्देश

बंदियों को समयबद्ध विधिक सहायता, स्वास्थ्य, भोजन व सुविधाओं की व्यवस्थाओं का लिया जायजा, प्रशिक्षण प्राप्त बंदियों को वितरित किए प्रमाण पत्र

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

छत्तीसगढ़ राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, बिलासपुर के निर्देशानुसार एसओपी-2016 एवं संबंधित प्रावधानों के तहत गठित बोर्ड ऑफ विजिटर्स द्वारा जिला जेल बेमेतरा का व्यापक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण की अध्यक्षता माननीय श्रीमती सरोज नंद दास, प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बेमेतरा ने की। इस दौरान कलेक्टर सुश्री प्रतिष्ठा ममगाईं, पुलिस अधीक्षक, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अपर कलेक्टर, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, लोक निर्माण विभाग के कार्यपालन यंत्री, जिला शिक्षा अधिकारी, जिला कृषि अधिकारी सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

जेल लीगल एड क्लीनिक, बंदियों को उपलब्ध कराई जा रही विधिक सहायता, स्वास्थ्य सेवाओं, भोजन, स्वच्छता, सुरक्षा एवं अन्य मूलभूत सुविधाओं का विस्तृत अवलोकन किया। अधिकारियों ने समस्त बैरकों का भ्रमण कर बंदियों से अलग-अलग चर्चा की और उनकी समस्याओं एवं सुझावों की जानकारी ली। चर्चा के दौरान बंदियों ने बताया कि जेल में किसी भी प्रकार का जातिगत भेदभाव नहीं है तथा सभी के साथ समान व्यवहार किया जाता है। निरीक्षण के दौरान यह भी पाया गया कि जेल के संधारित अभिलेखों एवं रजिस्टरों में जाति संबंधी किसी प्रकार का उल्लेख नहीं किया गया है।

बोर्ड ने बंदियों के मानसिक एवं सामाजिक विकास के लिए उपलब्ध मनोरंजन सुविधाओं का भी निरीक्षण किया। जेल की दो बैरकों में टेलीविजन की व्यवस्था है, जहां समाचार, योग, आध्यात्मिक एवं प्रेरणादायक कार्यक्रमों का नियमित प्रसारण किया जाता है। इसके अतिरिक्त तबला, ढोलक, झांझ, मंजीरा जैसे वाद्ययंत्र तथा लूडो एवं कैरम जैसी खेल सामग्री भी बंदियों को उपलब्ध कराई गई है।

निरीक्षण के दौरान पेयजल, स्वच्छता एवं भोजन व्यवस्था की विशेष रूप से समीक्षा की गई। जिला जेल में तीन ट्यूबवेल, एक आंतरिक जल टंकी तथा एक ओवरहेड टंकी के माध्यम से नियमित जलापूर्ति की व्यवस्था है। बोर्ड ने भोजन की गुणवत्ता का निरीक्षण करते हुए जेल अधीक्षक को निर्देश दिए कि जेल मैनुअल के अनुरूप प्रतिदिन बदलते मेन्यू के अनुसार पौष्टिक एवं गुणवत्तापूर्ण भोजन उपलब्ध कराया जाए तथा मौसमी सब्जियों एवं दालों का समुचित उपयोग सुनिश्चित किया जाए।

स्वास्थ्य सुविधाओं की समीक्षा के दौरान बताया गया कि जिला जेल में पदस्थ चिकित्सा अधिकारी डॉ. कुंदनलाल स्वर्णकार प्रत्येक मंगलवार को बंदियों का स्वास्थ्य परीक्षण एवं उपचार करते हैं, जबकि फार्मासिस्ट प्रतिदिन उपलब्ध रहकर आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करते हैं। बोर्ड ने स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक प्रभावी बनाए रखने के निर्देश दिए।

निरीक्षण के दौरान जेल लीगल एड क्लीनिक, विधिक सहायता हेल्प डेस्क, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कक्ष, मुलाकात कक्ष, बंदियों को उपलब्ध कराए गए वस्त्र, शौचालय एवं अन्य व्यवस्थाओं का भी अवलोकन किया गया तथा आवश्यक सुधारात्मक दिशा-निर्देश दिए गए।

इस अवसर पर जिला जेल में ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित 12 दिवसीय लघु उद्यमी फास्ट फूड स्टॉल प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण करने वाले विचाराधीन बंदियों को बोर्ड ऑफ विजिटर्स द्वारा प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। अधिकारियों ने कहा कि ऐसे कौशल विकास प्रशिक्षण बंदियों के पुनर्वास, आत्मनिर्भरता तथा समाज की मुख्यधारा से पुनः जुड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल हैं।

निगम की बड़ी कार्रवाई : नेहरू नगर भिलाई में अवैध प्रीकास्ट बाउंड्रीवाल पर चला बुलडोजर

हाईटेक हॉस्पिटल के पास 4 अवैध कब्जे हटाए, सरकारी जमीन कराई मुक्त

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

नगर पालिक निगम भिलाई ने अवैध अतिक्रमण के खिलाफ सख्त कार्रवाई करते हुए नेहरू नगर क्षेत्र में सरकारी भूमि पर बनी चार अवैध प्रीकास्ट बाउंड्रीवाल को जेसीबी से ध्वस्त कर दिया। निगम और पुलिस की संयुक्त टीम ने मौके से अवैध कब्जे हटाकर जमीन को कब्जा मुक्त कराया।

शिकायत के बाद हुई कार्रवाई

नगर निगम आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय के निर्देश पर सभी जोन में अवैध अतिक्रमण और बिना अनुमति निर्माण के खिलाफ अभियान चलाया जा रहा है। जोन-1 के नेहरू नगर स्थित हाईटेक हॉस्पिटल के समीप मॉडल टाउन में अवैध रूप से प्रीकास्ट बाउंड्रीवाल बनाकर दुकानें संचालित करने की शिकायत मिली थी। वार्ड प्रभारी की जांच में शिकायत सही पाए जाने पर कार्रवाई का निर्णय लिया गया।

संयुक्त टीम ने हटाए कब्जे

राजस्व विभाग, बेदखली दस्ता और पुलिस प्रशासन की संयुक्त टीम मौके पर पहुंची और जेसीबी की मदद से चारों अवैध प्रीकास्ट बाउंड्रीवाल को हटाया। निगम अधिकारियों ने साफ किया कि सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा, बिना अनुमति निर्माण और अतिक्रमण किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। शिकायत मिलने पर तत्काल जांच कर नियमानुसार सख्त कार्रवाई जारी रहेगी।

सर्व समाज कल्याण समिति कार्यालय में इंद्रजीत सिंह ने की लोगों से मुलाकात

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

स्ट्रेंथ लिफ्टिंग चैंपियनशिप के खिलाड़ियों ने भेंट किया स्मृति-चिह्न

कोहका स्थित सर्व समाज कल्याण समिति के कार्यालय में समिति के अध्यक्ष इंद्रजीत सिंह छोटू ने क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों, वरिष्ठजनों, माताओं-बहनों एवं युवा साथियों से आत्मीय मुलाकात की। इस दौरान विभिन्न मुद्दों पर सार्थक संवाद हुआ।

खिलाड़ियों ने किया सम्मान : कार्यक्रम में कुछ दिन पूर्व दक्षी राजहरा, जिला बालोद में आयोजित 3rd Western India Strength Lifting & IBP Champion ship-2026 के कोच एवं खिलाड़ियों ने सौजन्य भेंट की। खिलाड़ियों ने समापन समारोह का छायाचित्र स्मृति-चिह्न के रूप में इंद्रजीत सिंह छोटू को भेंट किया। छोटू ने भी समारोह में शामिल होने की सुखद स्मृतियां साझा कीं।

युवाओं के हित में कार्य की प्रेरणा : इंद्रजीत सिंह छोटू ने आत्मीय सम्मान और स्नेह के लिए सभी कोचों एवं खिलाड़ियों का आभार जताया। उन्होंने कहा कि यह स्नेह और विश्वास समाज एवं युवाओं के हित में निरंतर कार्य करने की प्रेरणा देता है। उन्होंने सभी खिलाड़ियों के उज्ज्वल भविष्य और निरंतर सफलता की हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

भाजयुमो ने नन्दकट्टी में चलाया डिजिटल लर्निंग अभियान

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

डिजिटल लर्निंग प्लेटफॉर्म के प्रचार-प्रसार के लिए भाजपा युवा मोर्चा ने जेवरा सिरसा मंडल के नन्दकट्टी गांव में अभियान चलाया। अभियान का नेतृत्व भाजयुमो के संगठन प्रभारी अखिलेश सिंह बंटी ने किया।

इस दौरान मंडल महामंत्री सचिन राजपूत, सुखनंदन देशमुख, ग्राम नंदकट्टी की सरपंच श्रीमती सुशील साहू, भाजयुमो जिला उपाध्यक्ष प्रवीण यादव, युवा मोर्चा मंडल अध्यक्ष भोला कुंभकार, महामंत्री सानू वर्मा और कार्यकर्ता मिथलेश साहू मौजूद रहे। जेवरा सिरसा मंडल के ज्येष्ठ-श्रेष्ठ कार्यकर्ता भी अभियान में शामिल हुए।

GOSWWAMI
FLEX PRINTING
ADVERTIZER
भिलाई में सबसे सस्ता, सबसे अच्छा
Hoardings • Flex Banner • Vinyl Printing
One Way Vision • Glow Sign Board
93290-13334, 74711-15735
goswamiflex@gmail.com
Address - 3rd Floor Shop No-1, Arora Tower, M.C. Market

अर्चना
फ्लाई ऐश ब्रिक्स
निर्माता एवं विक्रेता
हैवी इंडस्ट्रीयल एरिया, भिलाई
8 इंच एवं 9 इंच में उपलब्ध है।
संपर्क करें
9329960605, 9827160605, 9098639991

Baked by Suhani
Premium Homemade Cakes & Desserts
Birthday Cakes
Anniversary Cakes
Custom Theme Cakes
Serving Bhilai & Durg
Order Now:
@baked.by.suhani
M0.6263734520

10वीं, 12वीं, स्नातक एवं स्नातकोत्तर पास छात्र-छात्राओं के उज्जवल भविष्य के लिए
फायर एवं सेफ्टी प्रशिक्षण
नौकरी में सहायक
प्रवेश प्रारंभ सत्र 2026-2027
निजी कंपनियां जैसे पावर प्लांट, सीमेंट प्लांट, स्टील प्लांट, कंस्ट्रक्शन सेक्टर में बहुत नौकरियाँ मिलती है।
प्रशिक्षण शुल्क में विशेष छूट
सरकारी मान्यता प्राप्त प्रमाण पत्र दिया जाएगा
फायर एवं सेफ्टी प्रशिक्षण में प्रवेश प्रारंभ

क्र.	पाठ्यक्रम का नाम	क्र.	पाठ्यक्रम का नाम
1.	फायर टेक्नोलॉजी एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	5.	पी. जी. कोर्स व्यावसायिक सेफ्टी, स्वास्थ्य व पर्यावरण मैनेजमेंट सिस्टम
2.	इंडस्ट्रियल सेफ्टी / पी. जी. इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6.	हैल्थ सेनेटरी इंस्पेक्टर
3.	बी.एस.सी. इन फायर सेफ्टी	7.	सब- फायर ऑफिसर
4.	पी. जी. कोर्स फायर एवं इंडस्ट्रियल सेफ्टी	8.	सर्टिफिकेट इन फायरमैन-इंडस्ट्रियल सेफ्टी

(An Authorized Training Centre of AEERO)
फायर सेफ्टी एवं डिजास्टर मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट
(मान्यता प्राप्त निजी प्रशिक्षण संस्थान)
कैंपस :- इंदिरा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल, सुपेला, भिलाई, जिला-दुर्ग, छत्तीसगढ़
ADMISSION HELPLINE: 7697212782

BA
BCA
BCom
BBA
BSc
PGDCA
MSc CHEMISTRY
MSc BIOTECHNOLOGY
MSc BOTANY
MSc ZOOLOGY
MSc COMPUTER Sc
MSc MATHS
MA ENGLISH
MCom
BLib
MLib
DCA
MA CHHATTISGARHI
Deepak Advertisers
Affiliated to Hemchand Yadav University, Durg
SAI COLLEGE
Street-69, Sector-6, Bhilai
70248 86996
99770 01027

"यह समाचार पत्र आलोक तिवारी द्वारा 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से आलोक तिवारी की ओर से प्रकाशित की जाती है, जिसका संपादन आलोक तिवारी द्वारा किया जाता है तथा इसका मुद्रण समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 पर किया जाता है। (समाचार चयन के लिए PRP Act, 2023 के तहत संपादक जिम्मेदार है)। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।" संपादक आलोक तिवारी, मो. 74154-69100